अगाथा क्रिस्टी

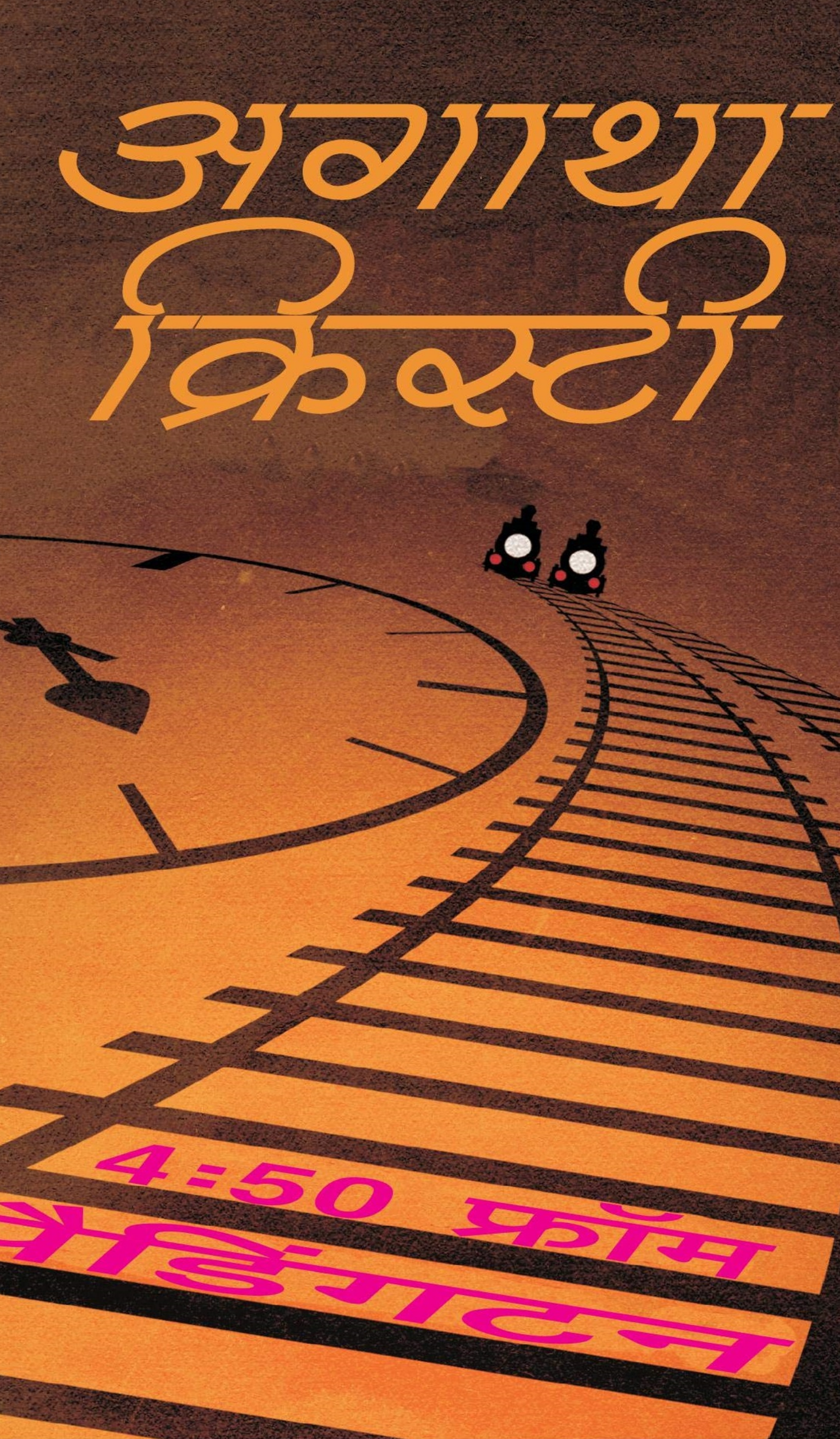

4:50 फ्रॉम पैडिंगटन

4:50 फ्रॉम पैडिंगटन

अगाथा क्रिस्टी

अनुवाद
प्रभात रंजन

हार्परकॉलिंस पाब्लिशर्स इंडिया

अध्याय 1

मिसेज़ मैकगिलीकडी प्लेटफॉर्म पर हाँफती हुई चल रही थी, उस कुली के पीछे-पीछे जो उनके सूटकेस को उठाए चल रहा था। मिसेज़ मैकगिलीकडी कद में छोटी थी, थोड़ी गोलमटोल, जबकि कुली लम्बा था, तेज़ी से चलने वाला। इसके अलावा, मिसेज़ मैकगिलीकडी के हाथों में बहुत सारे पैकेट थे; दिन भर क्रिसमस के लिए ख़रीदारी करने के कारण। इसीलिये, वह दौड़ बराबरी वाली नहीं लग रही थी, वह कुली प्लेटफॉर्म के आखिर में कोने से मुड़ चुका था जबकि मिसेज़ मैकगिलीकडी अभी भी सीधी चली आ रही थी।

प्लेटफॉर्म नम्बर 1 पर उस समय कुछ ख़ास भीड़-भाड़ नहीं थी, क्योंकि ट्रेन कुछ देर पहले ही वहाँ से गयी थी। लेकिन उससे आगे जो जगह थी वहाँ कई दिशाओं से लोग आ जा रहे थे, भूमिगत मेट्रो से, सामानघरों से, चायघरों से, पूछताछ के दफ़्तरों से, सूचना केन्द्रों से, आगमन-प्रस्थान केन्द्रों से बाहर की दुनिया की तरफ़ जा रहे थे।

मिसेज़ मैकगिलीकडी और उनके हाथ के पैकेट आने जाने वालों से टकराते जा रहे थे, लेकिन आख़िरकार वह प्लेटफॉर्म नम्बर 3 के प्रवेश के पास पहुँच ही गयी, और उन्होंने अपने एक हाथ का पैकेट नीचे पैर के पास रखा और अपने बैग में टिकट खोजने लगी जिसे देखकर गेट पर खड़ा वह वर्दी वाला गार्ड उनको अन्दर जाने की इजाज़त देता।

उसी समय, एक कर्कश लेकिन शिष्ट आवाज़ उनके सिर के ऊपर कहीं से सुनाई दी।

'जो ट्रेन प्लेटफॉर्म नम्बर 3 पर खड़ी है,' उस आवाज़ ने कहा, 'वह 4:50 पर ब्रेखेम्पटन, मिलचेस्टर, वावेर्टन, कारविल जंक्शन, रोचेस्टर और चाडमाउथ स्टेशनों को जाने वाली है। ब्रेखेम्पटन और मिलचेस्टर जाने वाले यात्री ट्रेन में पीछे सफ़र करते हैं। वेनेक्वे जाने वाले यात्री रोचेस्टर में गाड़ी बदलते हैं।' आवाज़ एक क्लिक के साथ बन्द हो गयी, और उसने फिर दूसरी घोषणा की कि बर्मिंघम और वोल्वरहैंप्टन से आने वाली 4:35 वाली ट्रेन प्लेटफॉर्म नम्बर 9 पर आने वाली है।

मिसेज़ मैकगिलीकडी को अपना टिकट मिल गया और उन्होंने उसे चेकर को दिखा दिया। वह आदमी उसे थोड़ा-सा फाड़ते हुए फुसफुसाया: 'दायीं तरफ़—पीछे की ओर।'

मिसेज़ मैकगिलीकडी प्लेटफॉर्म की तरफ़ बढ़ी और उन्होंने पाया कि उनका कुली तीसरे दर्जे के डिब्बे के बाहर खड़ा कुछ बोरियत महसूस कर रहा था।

'यहाँ है, मैडम।'

'मैं पहले दर्जे में सफ़र कर रही हूँ,' मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा।

'आपने कहा नहीं था' कुली बुदबुदाया। उसकी आँखों ने उनके ट्वीड कोट की तरफ़ कुछ उपेक्षा से देखा।

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा तो था लेकिन उन्होंने इस बात को लेकर बहस नहीं की। उनकी सांसें बुरी तरफ़ से फूल रही थीं।

कुली ने सूटकेस उठाया और उसे लेकर साथ वाले डिब्बे की

तरफ़ बढ़ गया जहाँ मिसेज़ मैकगिलीकडी एकान्त में बैठ चुकी थीं। 4:50 वाली ट्रेन से ज़्यादा लोग जाते नहीं थे। पहले दर्जे में चलने वाले या तो सुबह की एक्सप्रेस गाड़ियों में सफ़र करते थे या फिर 6:40 से जिसमें भोजन का डिब्बा भी लगा हुआ था। मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कुली को बख़्शीश दी जिसे उसने बड़ी मायूसी के साथ लिया, उसे यह तीसरे दर्जे में सफ़र करने के लिहाज से ठीक लगा लेकिन पहले दर्जे में सफ़र करने के लिहाज से नहीं। मिसेज़ मैकगिलीकडी उत्तर से रात के सफ़र में आने के बाद और दिन भर जमकर ख़रीदारी करने के बाद आरामदेह सफ़र करने के लिए तो तैयार थीं लेकिन उनके पास जमकर बख़्शीश देने का समय नहीं था।

उन्होंने अपनी पीठ पीछे लगे महँगे गद्दे पर टिकाते हुए उबासी ली और अपनी पत्रिका खोल ली। पाँच मिनट के बाद सीटी की आवाज़ के साथ ट्रेन चल पड़ी। मिसेज़ मैकगिलीकडी के हाथों से पत्रिका गिर गयी, उनका सिर एक तरफ़ झुक गया, तीन मिनट के बाद वह गहरी नींद में थी। क़रीब 35 मिनट सोने के बाद वह तरोताजा होकर उठीं। उन्होंने अपनी हैट ठीक की और बैठकर खिड़की से बाहर उस भागती हुई गाड़ी से गाँवों का जो भी हिस्सा दिखाई दे रहा था देखने लगी। तब तक काफ़ी अँधेरा हो चुका था, दिसम्बर का एक उदास कुहरीला दिन—पाँच दिनों के बाद क्रिसमस आने वाला था। लन्दन में घना कोहरा था और अँधेरा भी, गाँवों में उससे कम नहीं था, हालाँकि वहाँ बीच-बीच में खुशी की चमक आ जाती थी जब शहरों और स्टेशनों से गुज़रते हुए ट्रेन से रोशनी पड़ती थी।

'इस वक़्त हम आखिरी चाय पेश कर रहे हैं,' एक अटेण्डेण्ट ने दरवाज़े को किसी जिन्न की तरह धीरे से खोलते हुए कहा।

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कुछ देर पहले ही बड़े से डिपार्टमेन्टल स्टोर से चाय ली थी। उस समय तो उनका मन पूरी तरह भरा हुआ था। अटेंडेंट गलियारे में बार-बार यही कहते हुए गया। मिसेज़ मैकगिलीकडी ने खुश होते हुए देखा जहाँ उनके सामान के पैकेट रखे हुए थे। चेहरा पोछने वाले तौलिये बेहतर बनावट के थे और एकदम वैसे जैसे कि मारग्रेट को चाहिए थे, रॉबी के लिए स्पेस गन और ज्यां के लिए जो खरगोश लिए थे वे अच्छे थे, और उस शाम उन्होंने अपने लिए जो कोट लिया था वह एकदम वैसा था जैसा कि उन्हें चाहिए था, गरम लेकिन पहनने लायक। हेक्टर के लिए भी पुलोवर—जमकर जो ख़रीदारी की थी उन्होंने उसको अपने मन में सही ठहराया।

वह सन्तुष्ट होकर फिर खिड़की से बाहर देखने लगीं—दूसरी तरफ़ से एक ट्रेन चीखती हुई निकल गयी, जिससे खिड़की झनझना उठी। उनकी ट्रेन एक स्टेशन से गुज़री।

फिर उसकी गति धीमी होने लगी, शायद किसी सिग्नल के हुक्म को देखकर। कुछ मिनट तो वह रेंगती रही, फिर रुक गयी, अब वह फिर से चलने लगी। दूसरी तरफ़ से आने वाली एक और ट्रेन गुज़री, लेकिन पहले वाली ट्रेन से कम तेज़ी से। ट्रेन ने फिर से रफ़्तार पकड़ ली। उस समय एक और ट्रेन जो उसी तरफ़ जा रही थी, उसकी तरफ़ आती दिखी, एक पल के लिए तो ख़तरनाक लगा। एक समय में एक दिशा में जाती दो ट्रेनें, कभी एक तेज़ी से चलने लगती, कभी दूसरी। मिसेज़ मैकगिलीकडी ने अपने डिब्बे की खिड़की से साथ चल रही ट्रेन के कूपों के अन्दर झाँका। ज़्यादातर खिड़कियों के पर्दे गिरे हुए थे, लेकिन बीच-बीच में कूपों में सवार लोग दिखाई दे जाते थे। दूसरी ट्रेन पूरी तरह भरी हुई नहीं थी और उसके बहुत सारे कूपे खाली थे।

दोनों ही ट्रेन समान होने का भ्रम दे रहे थे कि तभी एक कूपे का पर्दा झटके के साथ खुला। मिसेज़ मैकगिलीकडी ने पहले दर्जे के उस कूपे की तरफ़ देखा जो महज़ कुछ फ़ीट की दूरी पर ही था।

फिर उन्होंने अपने पैरों पर खड़े होते हुए हल्की-सी चीख के साथ अपनी साँसें थाम लीं।

खिड़की की तरफ़ पीठ किये एक आदमी खड़ा था। उसके हाथ एक औरत की गर्दन पर थे, वह धीरे-धीरे, निर्दयी तरीके से उसका गला घोंट रहा था। औरत की आँखें कोटरों से बाहर निकलने-निकलने को थीं, उसका चेहरा पीला फक पड़ता जा रहा था। मिसेज़ मैकगिलीकडी अपलक देखे जा रही थी कि अन्त आ गया और औरत का शरीर बेजान होकर उस आदमी के हाथों में झूलने लगा।

उसी समय, मिसेज़ मैकगिलीकडी की ट्रेन मंद पड़ने लगी और दूसरी ट्रेन रफ़्तार पकड़ने लगी। वह आगे बढ़ गयी और चन्द पलों में ही वह आँखों से ओझल हो गयी।

तभी अपने आप मिसेज़ मैकगिलीकडी के हाथ ऊपर उठे और ऊपर लगे इंटरकॉम की तरफ़ बढ़े, लेकिन फिर कुछ दुविधा में पड़कर रुक गये। आखिर, उस ट्रेन में घण्टी बजाकर क्या होगा जिसमें वह सफ़र कर रही थी? उन्होंने इतने क़रीब से इतना हैरतनाक नज़ारा देखा था कि लगा जैसे उनको लकवा मार गया हो। तत्काल कुछ किये जाने की ज़रूरत थी—लेकिन क्या?

उनके डिब्बे का दरवाज़ा खुला और एक टिकट कलक्टर ने आकर उनसे टिकट माँगा।

मिसेज़ मैकगिलीकडी झटके से आपे में आ गयी।

'एक औरत का गला दबा दिया गया है,' उन्होंने कहा। 'उस ट्रेन में जो अभी-अभी बगल से गुज़री है। मैंने देखा।'

टिकट कलक्टर ने कुछ सन्देह से उनकी तरफ़ देखा।

'फिर से कहिये, मैडम?'

'एक आदमी ने उस ट्रेन में एक औरत का गला दबा दिया। मैंने वहाँ से देखा,' उन्होंने खिड़की की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

टिकट कलक्टर को अभी भी सन्देह हो रहा था।

'गला घोंट दिया?'

'हाँ, गला घोंट दिया! मैंने देखा, मैंने कहा न। आपको तुरन्त कुछ करना चाहिए!'

टिकट कलक्टर अफ़सोस जताते हुए खाँसने लगा।

'आपको ऐसा नहीं लगता मैडम कि आपको थोड़ी झपकी आ गयी हो—और—' उसने बड़ी सफाई से पूछा।

'मुझे झपकी आयी तो थी, लेकिन अगर आपको यह लगता है कि मुझे कोई सपना आया था तो मैं आपको बता दूँ कि आप बिलकुल ग़लत हैं। मैंने देखा, बताया न आपको।'

टिकट कलक्टर की आँखें उस खुली हुई मैगज़ीन के पन्नों पर गयीं जो सीट पर पड़ी हुई थी। उस खुले हुए पन्ने पर एक लड़की का गला दबाया जा रहा था जबकि हाथ में रिवॉल्वर

लिए एक आदमी उन दोनों को दरवाज़े से धमका रहा था।

उसने उसे देखकर कहा—'आपको ऐसा नहीं लगता मैडम कि आप एक मज़ेदार कहानी पढ़ रही थीं, और आपको नींद आ गयी, जब उठीं तो कुछ उलझन-सी हो गयी—'

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने उसे रोक दिया।

'मैंने उसे देखा था,' उन्होंने कहा। 'मैं उतनी ही जागी हुई थी जितने कि आप हैं। और मैंने बाहर झाँककर साथ चलती ट्रेन की तरफ़ देखा, और एक आदमी एक औरत का गला दबा रहा था। अब मैं यह जानना चाहती हूँ कि आप इस बारे में क्या करने वाले हैं?'

'अच्छा—मैडम'

'मैं उम्मीद करती हूँ कि आप इस बारे में कुछ ज़रूर करेंगे?'

टिकट कलक्टर ने कुछ झिझकते हुए उसाँस ली और अपनी घड़ी की तरफ़ देखा।

'ठीक सात मिनट में हम ब्रेकम्पटन में होंगे। आपने मुझे जो बताया मैं उसके बारे में रिपोर्ट दर्ज कर दूँगा। आपने क्या बताया कि ट्रेन किस दिशा में जा रही थी?'

'ज़ाहिर है इसी ट्रेन की दिशा में। आपको क्या लगता है कि ट्रेन अगर उल्टी दिशा में जा रही होती तो मैं इतनी देर में इतना कुछ देख सकती थी?'

टिकट कलक्टर ने ऐसे देखा जैसे मिसेज़ मैकगिलीकडी कहीं भी कुछ भी देख पाने में समर्थ हों। लेकिन वह विनम्र बना

रहा।

'आप मेरे ऊपर भरोसा कर सकती हैं, मैडम,' उसने कहा। 'मैं आपका बयान दर्ज करवा दूँगा। शायद मुझे आपके नाम और पते की ज़रूरत पड़े—अगर ज़रूरत पड़ी तो—'

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने उसको वहाँ का पता दे दिया जहाँ वह अगले कुछ दिनों तक रहने वाली थीं और अपने स्कॉटलैंड के घर का पता भी, और कलक्टर ने उस पते को लिख लिया। फिर वह एक ऐसे आदमी की तरह वहाँ से चला गया जिसने अपना काम पूरा कर लिया हो और एक परेशान करने वाले मुसाफ़िर से निपट चुका हो।

मिसेज़ मैकगिलीकडी सन्तुष्ट नहीं हुई थी। क्या वह टिकट कलक्टर उनका बयान दर्ज करवायेगा? या वह उनको यूँ ही शान्त करने की कोशिश कर रहा था? हो सकता है ट्रेन में कई उम्र दराज़ औरतें सफ़र करती रहती हों, जिनको पक्के तौर पर ऐसा लगने लगता हो कि उन्होंने कम्युनिस्टो की चाल को बेनकाब कर दिया, या उनकी हत्या का अन्देशा है, या उन्होंने कोई उड़न तश्तरी देख ली हो, या उन्होंने ऐसी हत्याओं के बारे में बताया हो जो कभी हुई ही न हों। अगर उस टिकट कलक्टर को वह उन जैसी लगी हो तो—

ट्रेन की रफ़्तार अब कम होने लगी थी, वह अब एक बड़े शहर की चमकती रोशनियों की तरफ़ दौड़ रही थी। मिसेज़ मैकगिलीकडी ने अपना हैंडबैग खोला, उसके अन्दर उनको एक बिल की रसीद मिली, उसके पीछे उन्होंने अपने बॉल पेन से नोट लिखा, उसे अलग से एक लिफ़ाफ़े में रख लिया, जो संयोग से उनके पास पड़ा हुआ था। लिफ़ाफ़े को नीचे रखा और उसके ऊपर लिखने लगीं।

ट्रेन धीरे-धीरे एक भीड़ भरे प्लेटफॉर्म पर रुकी। वहाँ भी वही आवाज़ गूँज रही थी: 'जो ट्रेन अभी प्लेटफॉर्म 1 पर आयी है वह 5:38 थी जो मिलचेस्टर, वावेर्टन, रोचेस्टर और चैडमाउथ स्टेशनों के लिए जाने वाली है। बासींग के बाज़ार को जाने वाले यात्री जो प्लेटफॉर्म नम्बर 3 पर इन्तज़ार कर रहे हैं वे उस ट्रेन में चढ़ जायें। जो कार्बरी के लिए नम्बर 1 रास्ता है।'

मिसेज़ मैकगिलीकडी उत्सुकता से प्लेटफॉर्म की तरफ़ देखने लगीं। इतने सारे यात्री और इतने कम कुली। आह, वह दिखा! उन्होंने उसे आदेश देते हुए बुलाया।

'कुली! कृपया इसे अभी स्टेशन मास्टर के पास लेकर जाओ।'

उन्होंने उसके हाथ में लिफ़ाफ़ा और उसके साथ एक शिलिंग देते हुए कहा।

फिर राहत की साँस लेते हुए वह अपने सीट पर पसर गयीं। ख़ैर उन्होंने जो करना तथा उन्होंने कर दिया। उनके दिमाग़ में तत्काल इस बात का अफ़सोस हो रहा था कि उन्होंने बेकार ही एक शिलिंग दे दिया—छह पेन्स ही काफ़ी होते—

उनके दिमाग़ में फिर से वही दृश्य कौंधने लगा जो उन्होंने देखा था।

भयानक था, बहुत भयानक—वैसे तो वह मज़बूत कलेजे की महिला थी, लेकिन वह काँपने लगी। अगर उस कूपे का पर्दा नहीं उठा होता—ज़ाहिर है वह विधाता की मर्ज़ी थी।

ईश्वर की मर्ज़ी यही थी कि मिसेज़ मैकगिलीकडी उस

अपराध की गवाह बने। उनके होंठ मज़बूती से जम गये।

आवाज़ हुई, सीटी बजी, दरवाज़े बन्द होने लगे। 5:38 ब्रैखेम्प्टन स्टेशन से धीरे-धीरे चलने लगी। एक घण्टे और पाँच मिनट के बाद वह ट्रेन मिलचेस्टर स्टेशन पर रुकी।

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने अपने पैकेट सँभाले, सूटकेस उठाया और ट्रेन से उतर गयीं। उन्होंने प्लेटफॉर्म पर ऊपर नीचे देखा। उनके दिमाग़ में फिर वही ख़्याल आया: अधिक कुली नहीं थे। लगता था जैसे कि सारे कुली वे चिट्ठियों के पैकेट और सामान समेटने में लगे थे। ऐसा लगता था कि आजकल मुसाफ़िरों से यह उम्मीद की जाती थी कि वे अपना समान खुद ही उठायें। ठीक है, लेकिन वह अपना सूटकेस, छाता और इतना सारा समान नहीं उठा सकती थीं। उनको इन्तज़ार करना पड़ा, और आख़िरकार उनको एक कुली मिल ही गया।

'टैक्सी?'

'मुझे लगता है कोई मुझे लेने आया होगा।'

मिलचेस्टर स्टेशन के बाहर एक टैक्सी ड्राइवर खड़ा था जो आगे आ गया। उसने बड़ी विनम्रता से स्थानीय भाषा में कहा, क्या आप मिसेज़ मैकगिलीकडी हैं? सेंट मेरी मीड के लिए?'

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने हामी भर दी। कुली को अच्छी बख्शीश दी गयी, अधिक नहीं तो पर्याप्त। वह कार मिसेज़ मैकगिलीकडी और उनके सामानों के साथ रात में चल पड़ी। आगे की तरफ़ झुककर बैठने के कारण उनको आराम का मौका नहीं मिला। आख़िरकार गाड़ी गाँव के जाने पहचाने रास्तों से गुज़रती हुई उनके मुकाम तक पहुँची। जब एक बूढ़ी काम वाली ने दरवाज़ा खोला तो ड्राइवर ने सामान अन्दर

दिया। मिसेज़ मैकगिलीकडी सीधा मेन हॉल पहुँचीं जहाँ उनकी मेज़बान उनका इन्तज़ार कर रही थीं, जो खुद भी उम्रदराज़ थीं।

'एलिज़ाबेथ!'

'जेन!'

उन्होंने एक-दूसरे को चूमा और बिना किसी भूमिका के बातचीत करने लगीं।

'ओह जेन! पता है मैंने एक ख़ून होते हुए देखा!'

अध्याय-2

अपनी माँ और नानी से सीखी मज़ाक करने की आदतों के अनुसार: एक सच्ची औरत न तो घबड़ाती है न ही आश्चर्यचकित होती है—मिस मार्पल ने अपनी भौंहें उठायीं और गर्दन हिलाते हुए यह कहा:

'तुम्हारे लिए बहुत दुखद है एल्स्पेथ और बहुत अजीब भी। मुझे लगता है बेहतर यही है कि तुम मुझे अभी ही बता दो।'

मिसेज़ मैकगिलीकडी यही तो चाहती थी। उन्होंने अपनी परिचारिका को आग के और क़रीब ले जाने के लिए कहा, वहाँ बैठ गयीं, अपने दास्ताने उतारे, और विस्तार से सुनाने लगीं।

मिस मार्पल ने पूरे ध्यान से सुना। मिसेज़ मैकगिलीकडी जब साँस लेने के लिए रुकी तो मिस मार्पल ने फ़ैसलाकुन अन्दाज़ में कहना शुरू कर दिया।

'सबसे अच्छी बात मुझे यह लगती है मेरी दोस्त कि तुम अपना टोप उतारकर ऊपर जाओ और अपना चेहरा धो लो। फिर हम सब रात का खाना खायेंगे—इस बीच हम इस बारे में बिलकुल चर्चा नहीं करेंगे। खाने के बाद हम इस मामले के बारे में विस्तार से बात करेंगे और इसके हर पहलू पर बात करेंगे।'

मिसेज़ मैकगिलीकडी को यह सुझाव पसन्द आया। दोनों औरतों ने सेंट मैरी मीड गाँव में रहने के दौरान हुए जीवन के अनुभवों के बारे में बातें करते हुए खाना खाया। मिस मार्पल ने केमिस्ट की पत्नी से जुड़े स्कैंडल की चर्चा की, स्कूल की

शिक्षिका और गाँव वालों के बीच के तनाव के बारे में बताया। उसके बाद उन्होंने मिस मार्पल और मिसेज़ मैकगिलीकडी के बगानों के बारे में चर्चा की।

मिस मार्पल ने मेज़ से उठते हुए कहा, 'पाओनी के पौधे सबसे गैरज़िम्मेदार होते हैं। या तो वे उगते हैं या नहीं उगते। लेकिन अगर वे एक बार जम जाते हैं तो फिर आजीवन आपके साथ रहते हैं, इसलिए आजकल उनकी बेहतरीन किस्में आयी हुई हैं।'

दोनों एक बार फिर से आग के सामने आकर बैठ गयीं और मिस मार्पल कपबोर्ड के एक कोने से वाटरफोर्ड के ग्लास ले आयीं और दूसरे कपबोर्ड से ग्लासेस निकालीं।

'आज रात तुम्हारे लिए कॉफी नहीं है एल्स्पेथ,' उन्होंने कहा। तुम पहले से ही बहुत जोश में हो और शायद सो नहीं पाओ। पहले तुम्हारे लिए एक ग्लास वाइन और फिर उसके बाद हो सके तो कैमोमिल की चाय।'

मिसेज़ मैकगिलीकडी के लिए उन्होंने एक गिलास में वाइन ढाली।

'जेन,' मिसेज़ मैकगिलीकडी ने गिलास से एक घूँट लेते हुए, कहा 'तुम्हें कहीं ऐसा तो नहीं लग रहा कि मैंने इसके बारे में कोई सपना देखा था या कल्पना की थी?'

'बिलकुल नहीं,' मिस मार्पल ने गर्मजोशी के साथ कहा।

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने राहत की साँस ली।

'वैसे तो वह टिकट कलक्टर काफ़ी विनम्र था लेकिन वह यही

समझ रहा था,' उन्होंने कहा।

'मुझे लगता है एल्स्पेथ, इस तरह एक हालात में ऐसा लगना स्वाभाविक है। यह एक ऐसी कहानी लगती है—है भी—जिसके न होने की सम्भावना अधिक लगती है। और तुम उसके लिए एक अजनबी थीं। नहीं, मुझे इसमें कोई शक़ नहीं है कि जो कुछ तुमने देखा या जो तुमने बताया कि तुमने देखा। यह बहुत अस्वाभाविक-सी बात है—लेकिन असम्भव तो बिलकुल नहीं है। मैं समझ सकती हूँ कि जब कोई ट्रेन तुम्हारे ट्रेन के समानान्तर जा रही हो तो तुम यह देखने के लिए उसके एकाध कूपों में झाँक कर देखो कि उसमें क्या हो रहा है। मुझे याद है, एक बार मैंने देखा कि एक छोटी लड़की टेडी बीयर के साथ खेल रही थी, अचानक उसने उसे जान बूझकर एक मोटे आदमी की तरफ़ फेंक दिया जो एक कोने में सो रहा था और वह अचकचाकर उठ बैठा, और दूसरे मुसाफ़िर हैरत से उसे देखने लगे। मैंने यह सब एकदम साफ़-साफ़ देखा था। उसके बाद एक महिला ठीक-ठीक यह बता सकती थी कि वे कैसे लग रहे थे और वे क्या कर रहे थे।'

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने ऐसे सिर हिलाया जैसे वह आभार जता रही हों।

'एकदम ऐसा ही हुआ था।'

'तुमने बताया कि उस आदमी की पीठ तुम्हारी तरफ़ थी। इसलिए तुमने उसका चेहरा नहीं देखा?'

'नहीं।'

'और वह औरत, क्या उसके बारे में तुम बता सकती हो?

जवान या बूढ़ी?'

'जवान थी। तीस से पैंतीस के बीच की, मैं इससे अधिक कुछ नहीं कह सकती।'

'सुन्दर थी?'

'मैं यह भी नहीं कह सकती। उसका चेहरा पूरी तरह से विकृत हो चुका था और—'

मिस मार्पल ने तुरन्त कहा:

'हाँ, हाँ, मैं समझ सकती हूँ। उसने कपड़े किस तरह के पहन रखे थे?'

'उसने रोयेंदार कोट पहन रखा था, कुछ पीले जैसे रंग का रोयेंदार। उसके सिर पर टोप नहीं था। उसके बाल सुनहरे थे।'

'और उस आदमी में ऐसा कुछ ख़ास नहीं था जिसे तुम याद कर सको?'

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने जवाब देने से पहले कुछ देर सोचा।

'वह लम्बा था—और गहरे रंग का, मुझे लगता है। उसने एक भारी-सा कोट पहन रखा था इसलिए मैं उसके कद काठी के बारे में कुछ ख़ास नहीं कह सकती।' उसने जवाब दिया, 'यह कुछ ऐसा नहीं है जिसके बारे में कुछ ख़ास बता सकूँ।'

मिस मार्पल ने कुछ रुकते हुए कहा, 'तुम बिलकुल पक्के तौर पर यह कह सकती हो कि वह औरत मर चुकी थी?'

'वह मर चुकी थी, इसके बारे में मैं पक्के तौर पर कह सकती

हूँ। उसकी जीभ बाहर निकल आयी थी—बल्कि मैं इसके बारे में बात भी नहीं कर सकती—'

'ठीक है ठीक है,' मिस मार्पल ने जल्दी से कहा। 'मेरे ख़याल से इसके बारे में हम सुबह और बात करेंगे।'

'सुबह में?'

'मैं यह सोच रही हूँ कि सुबह के अख़बारों में इसके बारे में ख़बर होगी। जब उस आदमी ने उसके ऊपर हमला कर दिया और उसे मार दिया, उसके हाथ में लाश रही होगी। तो उसने क्या किया होगा? शायद वह पहले ही स्टेशन पर ट्रेन से उतर गया होगा—अच्छा यह बताओ—क्या तुमको यह याद है कि वह गलियारे वाला कूपा था?'

'नहीं वह नहीं था।'

'इससे यह समझ में आता है कि वह ट्रेन अधिक दूर नहीं जा रही थी। वह ज़रूर ब्रैखेम्प्टन में रुकती होगी। मान लो उसने ब्रैखेम्प्टन में ट्रेन छोड़ दी हो, शायद उसकी लाश को कोने वाली सीट पर टिका दिया हो, उसके रोयेंदार कोट के कॉलर से सिर छिपाकर, जिससे उसके बारे में लोगों को पता चलने में कुछ देर हो जाये। हाँ—मुझे लगता है उसने ऐसा ही किया होगा। लेकिन ज़ाहिर है, अधिक वक़्त नहीं बीता होगा जब उसके बारे में लोगों को पता चल गया होगा—और मुझे लगता है कि ट्रेन में एक औरत की लाश मिलने की खबर कल सुबह के अख़बार में होनी चाहिए—देखते हैं।'

II

लेकिन सुबह के अख़बार में ऐसा कुछ भी नहीं था।

मिस मार्पल और मिसेज़ मैकगिलीकडी को जब पूरी तरह यकीन हो गया कि इस बात की कोई ख़बर नहीं थी तो दोनों चुपचाप नाश्ता करने लगीं।

नाश्ते के बाद उन्होंने बगीचे का एक चक्कर लगाया। आम तौर पर इसमें बहुत मज़ा आता था, लेकिन आज उनको कुछ ख़ास मज़ा नहीं आया। मिस मार्पल ने कुछ नये और दुर्लभ पौधों के ऊपर ध्यान दिया लेकिन उनका ध्यान कहीं और ही था। और मिसेज़ मैकगिलीकडी ने हमेशा की तरह आज अपने दुर्लभ पौधों की चर्चा करके जवाबी हमला नहीं किया।

'यह बगीचा वैसा नहीं लग रहा जैसा कि इसे लगना चाहिए,' मिस मार्पल ने कहा, लेकिन यह बात भी उन्होंने बेख़्याली में कही। 'डॉक्टर हेडौक ने मुझे झुकने और घुटनों के बल बैठने के लिए पूरी तरह से मना कर दिया है—और वैसे, अगर झुकें नहीं, घुटनों के बल नहीं बैठें तो आप कर ही क्या सकते हैं? पुराने एडवर्ड हैं, लेकिन इतने पूर्वाग्रह से भरे हुए। और इस तरह के सारे काम उन्हें कई तरह की बुरी आदतों का शिकार बना देते हैं, चाय के कई कप, मिट्टी का इतना सारा काम—कोई ख़ास कम नहीं।'

'हाँ, मैं जानती हूँ,' मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा। 'मेरे लिए ऐसी कोई बात नहीं है कि झुकने की मनाही है, लेकिन अब इतना वजन बढ़ गया है इसलिए खाने के बाद इससे दिल पर बोझ पड़ता है।'

कुछ देर चुप्पी रही और फिर मिसेज़ मैकगिलीकडी खड़े होकर अपने दोस्त की तरफ़ मुड़ गयीं।

'अच्छा,' उन्होंने कहा।

वैसे इस शब्द का कोई मतलब नहीं था, लेकिन मिसेज़ मैकगिलीकडी ने जिस अन्दाज़ से यह बात कही थी उससे इसमें भरपूर अर्थ आ गया था, और मिस मार्पल इस बात का मतलब अच्छी तरह से समझ गयीं।

'मैं जानती हूँ,' उन्होंने कहा।

दोनों औरतों ने एक दूसरे की ओर देखा।

'मुझे लगता है हमें पुलिस स्टेशन जाकर सार्जेंट से बात करनी चाहिए। वे समझदार है, धीरज से बात सुनना जानते हैं, और मैं उनको बहुत अच्छी तरह से जानती हूँ, और वे भी मुझे जानते हैं। मुझे लगता है वे हमारी बात ध्यान से सुनेंगे—और हमारी बात को सही जगह पर पहुँचा भी देंगे,' मिस मार्पल ने कहा।

उसके क़रीब 45 मिनट के बाद वे दोनों एक महत्वपूर्ण आदमी से बात कर रही थीं, जिसकी उम्र 30 से 40 के बीच थी और जो बड़े ध्यान से उनकी बातों को सुन रहा था।

फ्रैंक कोरनीश ने उन दोनों महिलाओं को बड़े आदर से बुलाया। उन दोनों के लिए कुर्सी लगाकर उसने पूछा, 'अब बताइये मिस मार्पल, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'

मिस मार्पल ने कहा, 'मैं यह चाहती हूँ कि आप मेरी दोस्त मिसेज़ मैकगिलीकडी की बातों को सुनें।'

और सार्जेंट ने सुना। जब उनकी बात ख़त्म हो गयी तो वह एक या दो मिनट के लिए शान्त हो गया।

फिर उसने कहा:

'यह तो एक असाधारण कहानी है'। उसकी आँखें बिना किसी इरादे के मिसेज़ मैकगिलीकडी को ऊपर से नीचे देख रही थीं।

कुल मिलाकर वह उनकी कहानी के प्रति सकारात्मक लगे। एक समझदार महिला कहानी सुना रही थी, देखने में वह न तो कल्पना करने वाली लग रही थी न ही किसी तरह की पागल। सबसे बढ़कर मिस मार्पल उनकी कहानी में पूरी तरह यकीन कर रही थी, और वह मिस मार्पल के बारे में अच्छी तरह जानते थे। सेंट मेरी में हर कोई मिस मार्पल को जानता था। गोल-मटोल, थोड़ी सशंकित-सी दिखने वाली, लेकिन अन्दर से बहुत तेज़-तर्रार।

उसने गला साफ़कर बोलना शुरू किया।

'ज़ाहिर है' उसने कहना शुरू किया, 'हो सकता है आपको कुछ धोखा हुआ हो—नहीं मैं यह नहीं कह रहा कि आपको धोखा हुआ था—लेकिन आपको हो सकता है। बहुत तरह के खेल होते रहते हैं—हो सकता है वह उतना गम्भीर या जानलेवा न रहा हो।'

'मैं जानती हूँ कि मैंने देखा था,' मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कुछ सख़्ती के साथ कहा।

'और आप इससे डिगने वाली नहीं हैं,' फ्रैंक कोर्निश ने सोचा, 'मैं यही कह सकता हूँ कि हो सकता है कि आप सही ही

हों।'

उसने ज़ोर से कहा, आपने इस बात को रेलवे के अधिकारियों से बता दिया था, और अब आप मुझे बताने आयी हैं। यह सही तरीका है और आपको मेरे ऊपर विश्वास रखना चाहिए कि हम उसके ऊपर जाँच बिठायेंगे।'

वह झुका। मिस मार्पल ने अपना सिर हल्के से हिलाया। मिसेज़ मैकगिलीकडी कुछ ख़ास सन्तुष्ट नहीं लग रही थीं। लेकिन उन्होंने कुछ कहा नहीं। सार्जेंट कोर्निश ने मिस मार्पल को सम्बोधित किया, इसलिए नहीं कि वह उनके विचार जानना चाहता था, बल्कि वह यह जानना चाहता था कि मिस मार्पल कहना क्या चाहती थी।

'बताए गये तथ्यों के आधार पर आपको क्या लगता है कि लाश का क्या हुआ होगा?'

'मुझे तो सिर्फ़ दो ही सम्भावनाएँ लगती हैं,' मिस मार्पल ने बिना किसी झिझक के कहा। सबसे बड़ी तो यही सम्भावना लगती है कि वह लाश ट्रेन में ही छोड़ गया हो, लेकिन अब उस बात की सम्भावना नहीं लगती है क्योंकि ऐसी हालत में वह रात में किसी वक़्त मिल गयी होती, किसी और मुसाफ़िर को वह मिली होती, या फिर ट्रेन जब अपने आख़िरी स्टेशन पर पहुँची तो उसे रेलवे कर्मचारियों ने देख लिया होता।'

फ्रैंक कोर्निश ने सिर हिलाया।

'हत्यारे के लिए एक और रास्ता यह बचा होगा कि उसने लाश को ट्रेन से बाहर लाइन पर फेंक दिया हो, हो सकता है वह अब भी कहीं रेल लाइन पर पड़ी हो और किसी की उसके ऊपर नज़र न पड़ी हो—इसकी सम्भावना अभी ख़त्म

नहीं हुई है। लेकिन मुझे नहीं लगता है कि इससे निपटने का कोई और तरीका है।'

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा, 'हम यह पढ़ते हैं कि बड़े बक्से में लाश रख दी गयी। लेकिन आजकल ट्रंक के साथ कोई सफ़र नहीं करता, आजकल लोग सूटकेस लेकर चलते हैं, और सूटकेस में लाश को नहीं रखा जा सकता है।'

'हाँ, मैं आप लोगों की बात से सहमत हूँ, अगर कहीं कोई लाश है तो या तो अब तक वह मिल गयी होगी या जल्दी ही मिल जायेगी। अगर कुछ हुआ तो मैं आप लोगों को बताऊँगा—या आप लोग जल्दी ही उसके बारे में अख़बार में पढ़ लेंगे। इस बात की भी सम्भावना लगती है इतने बुरे हमले के बावजूद वह औरत असल में मरी न हो, और अपने पैरों पर चलकर ट्रेन से उतरकर चली गयी हो।' कोर्निश ने कहा।

'इसकी सम्भावना नहीं है कि वह बिना किसी मदद के निकल पायी हो,' मिस मार्पल ने कहा। 'और अगर ऐसा हुआ होगा तो किसी ने देखा होगा। एक आदमी किसी औरत को सहारा देकर ले जा रहा हो यह कहकर, कि वह बीमार है।'

'हाँ उसके ऊपर लोगों का ध्यान गया होगा,' कोर्निश ने कहा। 'या अगर कोई औरत कूपे में बेहोश या बीमार मिली हो तो उसके बारे में भी दर्ज किया गया होगा। आप निश्चिन्त रहें। अगर ऐसा है तो आप लोगों को जल्दी ही इसके बारे में सुनने को मिलेगा।'

दो दिन गुज़र गये। उस शाम मिस मार्पल को सार्जेंट कोर्निश का एक नोट मिला।

'आप लोगों ने जिस बारे में मुझे बताया था उसके बारे में पूरी

जाँच हो गयी और उसका कोई नतीजा नहीं निकला। किसी औरत की लाश नहीं मिली। किसी अस्पताल में ऐसी किसी औरत का इलाज नहीं हुआ। न ही किसी ने किसी औरत को किसी मर्द का सहारा लेकर जाते हुए देखा। इस सम्बन्ध में पूरी जाँच हो गयी है। मुझे लगता है कि आपकी दोस्त ने जो देखा था वह उतना गम्भीर मामला नहीं था जैसा कि उन्होंने सोचा था।

अध्याय-3

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा, 'बात की गम्भीरता को समझो? यह हत्या थी!'

वह मिस मार्पल पर ग़ुस्से में लग रही थी और मिस मार्पल ने उसकी तरफ़ मुड़ कर देखा।

'तुम भी कहो जेन, कि यह सब ग़लत था! यह कहो कि मैंने यह इस सबकी कल्पना की थी! तुम आजकल यही सोचती हो न, नहीं?' मिसेज़ मैकगिलीकडी बोली।

'किसी से भी ग़लती हो सकती है,' मिस मार्पल ने बड़े सहज भाव से ध्यान दिलाया। 'कोई भी एल्स्पेथ—तुम भी। मुझे लगता है हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए। लेकिन मुझे अब भी लगता है कि शायद तुमसे ग़लती नहीं हुई थी—तुम पढ़ने के लिए चश्मा लगाती हो लेकिन तुम्हारी दूर की नज़र बहुत तेज़ है—और तुम जो भी देखती हो उसे बहुत अच्छी तरह देख लेती हो। तुम जब यहाँ आयी थीं तब सदमे में दिखाई दे रही थीं।'

'यह एक ऐसी चीज़ है जिसे मैं कभी भी नहीं भूल सकती,' मिसेज़ मैकगिलीकडी ने काँपते हुए कहा। 'मुश्किल यह है कि मुझे यह समझ में नहीं आ रहा कि मैं इसके बारे में क्या कर सकती हूँ!'

'मुझे नहीं लगता है कि इसके बारे में तुम और भी कुछ कर सकती हो,' मिस मार्पल ने कुछ सोचते हुए कहा। 'तुमने जो देखा उसके बारे में बता दिया—रेलवे वालों को और पुलिस को भी। अब इससे ज़्यादा तुम क्या कर सकती हो।'

'यह एक तरह से राहत की बात है,' मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा, 'क्योंकि मैं क्रिसमस के तत्काल बाद सीलोन जा रही हूँ—रोड्रिक के साथ रहने के लिए, और मैं यह नहीं चाहती कि इस सफ़र को टालना पड़े—मुझे इसका बड़ी शिद्दत से इन्तज़ार है। लेकिन ज़ाहिर है, मैं इसे टाल देती अगर मुझे लगा होता कि यह मेरा कर्तव्य है,' उन्होंने आगे जोड़ते हुए कहा।

'मुझे पता है तुम टाल दोगी, एल्स्पेथ, लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि तुमने हरसम्भव कोशिश की।'

'यह पुलिस के ऊपर है,' मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा। 'और पुलिस बेवकूफ़ बने रहना चाहती है—'

मिस मार्पल ने असहमति में गर्दन हिलाई।

'नहीं,' उन्होंने कहा। 'पुलिस बेवकूफ़ नहीं है। और इससे यह मज़ेदार हो जाता है, नहीं?'

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने उनकी तरफ़ देखा और मिस मार्पल ने अपनी दोस्त के निर्णय की एक बार फिर तारीफ़ की कि वह बहुत सिद्धान्तवादी है।

'कोई यह जानना चाहता है,' मिस मार्पल ने कहा, 'सचमुच हुआ क्या था।'

'उसकी हत्या हुई थी?'

'ठीक है, लेकिन किसने उसे मारा, और क्यों, और उसकी लाश का क्या हुआ? वह अभी कहाँ है?'

'इसके बारे में पता करने का काम पुलिस का है।'

'एकदम सही—और उनको पता नहीं चला। इससे पता चलता है कि वह आदमी बहुत चालाक था—बहुत ही चालाक। मैं कल्पना नहीं कर सकती,' मिस मार्पल ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'उसने लाश को किस तरह ठिकाने लगाया—आपने गुस्से में एक औरत का ख़ून कर दिया—यह ज़रूर पहले से सोची समझी योजना नहीं रही होगी, आप कभी किसी औरत को इस तरह के हालात में नहीं मारते, वह भी तब जब कुछ ही मिनटों में ट्रेन किसी बड़े स्टेशन पर पहुँचने वाली हो। नहीं, ज़रूर कोई झगड़ा हुआ होगा—ईर्ष्या—कुछ इसी तरह का। आप उसका गला घोंट देते हैं, अपने हाथ में एक लाश लिए हुए होते हैं, वह भी तब जब ट्रेन एक स्टेशन पर पहुँचने वाली हो। आप क्या कर सकते हैं सिवाय इसके कि, एक कोने में लाश को ऐसे बैठा दें जैसे कि वह सो रही हो, उसका मुँह छिपाकर, फिर जितनी जल्दी सम्भव हो ट्रेन से उतर जायें। मैं इसके पीछे और किसी तरह की सम्भावना नहीं देखती—लेकिन कोई सम्भावना ज़रूर रही होगी।'

मिस मार्पल सोच में डूब गयी।

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने दो बार कहा, तब जाकर मिस मार्पल ने जवाब दिया।

'तुम बहरी तो नहीं हो गयी हो जेन।'

'शायद थोड़ी-सी, मुझे लोगों की बातें उतनी साफ़ तरीके से सुनाई नहीं देतीं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैंने आपको सुना नहीं। मुझे लग रहा है कि मेरा ध्यान कहीं और था।'

'मैंने कल लन्दन जाने वाली ट्रेनों के बारे में पता किया है। क्या दोपहर का वक़्त सही रहेगा? मैं मारग्रेट के पास जा रही हूँ और वह चाय से पहले मेरे आने की उम्मीद नहीं करेगी।'

'मैं सोचती हूँ एल्स्पेथ कि क्या तुम 12:15 बजे जा सकोगी? हम दिन का खाना जल्दी खा लेंगे।'

'बिलकुल ठीक है—' मिस मार्पल ने अपनी दोस्त की बात को आगे बढ़ाना शुरू किया:

'और मुझे यह भी लग रहा है, कि अगर तुम चाय के वक़्त तक नहीं पहुँचीं तो मारग्रेट को बुरा तो नहीं लगेगा—अगर तुम सात बजे के आसपास पहुँचो तो?'

मिसेज़ मैकगिलीकडी अपनी दोस्त को थोड़ी उत्सुकता के साथ देखने लगी।

'तुम्हारे दिमाग़ में चल क्या रहा है जेन?'

'मैं यह सोच रही हूँ कि मुझे तुम्हारे साथ लन्दन चलना चाहिए, और फिर वहाँ से हम दोनों को ब्रैखेम्प्टन तक ट्रेन से जाना चाहिए, जिस तरह तुम उस दिन गयी थीं। तुम वहाँ से लन्दन लौट जाना और मैं यहाँ वापस आ जाऊँगी। किराया मैं दे दूँगी,' मिस मार्पल ने इस बात पर ज़ोर देकर कहा।

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने किराये वाली इस बात को नज़रअन्दाज़ कर दिया।

'तुमको क्या लगता है जेन?' उन्होंने पूछा। 'एक और ख़ून?'

'बिलकुल नहीं,' मिस मार्पल ने कुछ चौंकते हुए कहा। 'मैं

अपनी आँखों से तुम्हारे साथ जाकर वह जगह देखना चाहती हूँ जहाँ ख़ून हुआ।'

ठीक इसी तरह अगले दिन मिस मार्पल और मिसेज़ मैकगिलीकडी ने पहले दर्जे के एक कूपे में एक-दूसरे के आमने-सामने वाली पैडिंगटन से 4:50 लन्दन की ट्रेन में थीं। पिछले शुक्रवार के मुक़ाबले पैडिंगटन में अधिक भीड़ थी—अब क्रिसमस में सिर्फ़ दो दिन ही रह गये थे, लेकिन 4:50 में थोड़ी शान्ति थी।

इस बार उस ट्रेन के साथ कोई और ट्रेन नहीं दौड़ रही थी, बीच-बीच में लन्दन जाने वाली ट्रेन सामने से तेज़ी से गुज़र जाती थी। दो बार ऐसा हुआ कि दूसरी तरफ़ से आती ट्रेन तेज़ी से उनके सामने से गुज़र गयी। बीच-बीच में मिसेज़ मैकगिलीकडी कुछ शंका से अपनी घड़ी की तरफ़ देखती थीं।

'यह कहना मुश्किल है कि हम उस स्टेशन पर कब पहुँचेंगे जिसे मैं जानती हूँ—' लेकिन वे एक के बाद दूसरे स्टेशन से गुज़रते जा रहे थे।

'हम लोग पाँच मिनट में ब्रेखेम्प्टन पहुँचने वाले हैं,' मिस मार्पल ने कहा।

दरवाज़े के पास एक टिकट कलक्टर आया। मिस मार्पल ने उसकी तरफ़ सवालिया निगाहों से देखा। मिसेज़ मैकगिलीकडी ने अपनी गर्दन हिलायी। यह वह टिकट कलक्टर नहीं था। उसने उनका टिकट चेक किया।

'मुझे लगता है कि हम ब्रेखेम्प्टन आने वाले हैं,' मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा।

'मुझे लगता है, हम बाहर की तरफ़ आ गये हैं,' मिस मार्पल ने कहा।

बाहर रोशनी चमक रही थी, बिल्डिंगें, बीच-बीच में सड़क और ट्राम की झलक भी दिखाई दे जाती थी। ट्रेन की रफ़्तार और कम हो गयी थी।

'हम वहाँ एक मिनट में पहुँच जायेंगे,' मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा। 'और मुझे नहीं लगता कि इस सफ़र का कोई फ़ायदा भी हुआ। क्या इससे तुमको याद आया, जेन?'

'नहीं,' मिस मार्पल ने थोड़ी शंका के साथ कहा।

'पैसे की बरबादी,' मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा, लेकिन उस तरह से नहीं जैसे वह अपने सफ़र का किराया खुद चुका रही हों। मिस मार्पल किराये की बात पर बिलकुल अड़ गयी थीं।

'कोई बात नहीं,' मिस मार्पल ने कहा, 'मैं अपनी आँखों से वह जगह देखना चाहती थी जहाँ यह सब हुआ था। यह ट्रेन कुछ मिनट देरी से चल रही है। क्या शुक्रवार को तुम्हारी ट्रेन समय पर थी?'

'मुझे लगता है। मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया था।'

ट्रेन धीरे-धीरे ब्रैखेम्पटन स्टेशन पर रुक गयी। लाउडस्पीकर पर उद्घोषणा होने लगी, दरवाज़े खुल रहे थे, बन्द हो रहे थे, लोग आ जा रहे थे और बाहर प्लेटफॉर्म की भीड़ में खो जा रहे थे। ख़ूब भीड़भाड़ थी।

बहुत आसानी से हत्यारा इस भीड़ में गायब हो सकता है, या किसी और ट्रेन में बैठकर अपने मक़ाम की तरफ़ जा सकता

है। यह किसी पुरुष यात्री के लिए बहुत आसान बात हो सकती है। लेकिन कोई लाश हवा में गायब हो जाये यह नहीं हो सकता है। लाश तो कहीं होनी चाहिए, मिस मार्पल ने सोचा।

मिसेज़ मैकगिलीकडी उतर गयी। उन्होंने बाहर प्लेटफॉर्म पर खुली हुई खिड़की के पास जाकर बात शुरू की।

'अपना ध्यान रखना, जेन,' उन्होंने कहा। 'ठण्ड से बचकर रहना। यह साल का सबसे ख़तरनाक समय है, और तुम्हारी उम्र भी अब उतनी कम नहीं रह गयी है।'

'मुझे पता है,' मिस मार्पल ने कहा।

'और अब हमें इस बात को लेकर उतना परेशान होने की ज़रूरत भी नहीं है। हम जो कर सकते थे, हमने किया।'

मिस मार्पल ने सिर हिलाया और कहा:

'ठण्ड में खड़ी मत रहो, एल्स्पेथ। नहीं तो तुमको ठण्ड ज़रूर लग जायेगी। बाहर रेस्तरां में जाकर एक कप गरम चाय और कॉफी पी लो। तुम्हारे पास समय है, 12 मिनट में तुम्हारी ट्रेन शहर से आयेगी।'

'मैं ले लूँगी। अच्छा बाय जेन।'

'बाय एल्स्पेथ। तुमको क्रिसमस मुबारक हो। मुझे उम्मीद है कि तुम मारग्रेट से अच्छी तरह मिलोगी। और सीलोन में जाकर ख़ूब मजे करना—रोड्रिक्स को मेरा ख़ूब सारा प्यार देना—अगर उसे मेरी याद हो तो, जिसमें मुझे वैसे शक़ है।'

'बिलकुल उसे तुम्हारी याद है—अच्छी तरह। तुमने उसकी कई तरह से मदद की है। जब वह स्कूल में था तो तुमने उसकी मदद की थी—लॉकर से पैसे गायब हो गये थे—वह इस बात को कभी नहीं भूला।'

'ओ अच्छा!' मिस मार्पल ने कहा।

मिसेज़ मैकगिलीकडी मुड़ गयी, गाड़ी की सीटी बज उठी, ट्रेन चलने लगी। मिस मार्पल गोल मटोल शरीर वाली अपनी दोस्त को जाते हुए देखती रही। एल्स्पेथ अब साफ़ मन से सीलोन जा सकती थीं—उन्होंने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया था।

जब ट्रेन रफ़्तार में आ गयी तो मिस मार्पल पीछे टिककर नहीं बैठीं। बल्कि वह आगे होकर तन कर बैठ गयीं और बड़ी गम्भीरता से कुछ सोचने लगीं। हालाँकि बोलने में मिस मार्पल भले कुछ उलझन में लगती हों लेकिन अपने दिमाग़ में वह पूरी तरह से स्पष्ट थीं। उनको एक समस्या सुलझानी थी, और अजीब बात यह थी कि इसने मिसेज़ मैकगिलीकडी की तरह उन्हें भी अपने कर्तव्य के भाव से भर दिया।

मिसेज़ मैकगिलीकडी ने कहा था कि उनसे जो कुछ हो सकता था उन्होंने किया। मिसेज़ मैकगिलीकडी के लिए तो यह बात सच हो सकती थी लेकिन मिस मार्पल को ऐसा नहीं लगता था।

यह एक ऐसा सवाल था जो उनके अपने ख़ास हुनर के इस्तेमाल को लेकर था—लेकिन वह शायद अहंकार था—आख़िरकार, उन्होंने क्या किया? उनकी दोस्त की आवाज़ उन तक गूँजती हुई पहुँच रही थी, 'तुम्हारी उम्र अब उतनी कम नहीं रह गयी है।'

बिना किसी उत्साह के, उन्होंने इस तरह से योजना बनायी जैसे कोई किसी अभियान या काम शुरू करने से पहले बनाता है। मिस मार्पल ने अपने दिमाग़ में उस काम के पक्ष और विपक्ष के पहलुओं को लिख लिया। पक्ष में इस तरह की बातें लिखी गयी थीं:

1. इंसान के स्वभाव का लम्बा अनुभव

2. सर हेनरी क्लिथेरिंग और उनका दत्तक पुत्र (जो अब शायद स्कॉटलैंड यार्ड में है), जिसने पैडोक के मामले में बहुत अच्छी तरह से काम किया था।

3. मेरे भतीजे रेमण्ड का दूसरा लड़का, डेविड, जो कि मुझे पक्का यकीन है कि ब्रिटिश रेलवे के मामले में बहुत जानकार है।

4. ग्रिसेल्दा का बेटा लियोनार्ड जिसे नक्शों के बारे में ख़ूब जानकारी थी।

मिस मार्पल ने इन पहलुओं के ऊपर सोचा और फिर फ़ैसला ले लिया। ये सब बेहद ज़रूरी थे, जो कमज़ोर पहलू थे उनको दूर करने के लिहाज़ से—ख़ासकर इसलिए क्योंकि वे शारीरिक रूप से कमज़ोर थीं।

'इस कारण यह सम्भव नहीं था कि वे इधर-उधर हर कहीं जाकर पूछताछ कर सकें,' मिस मार्पल ने सोचा।

यही सबसे बड़ी कमज़ोरी थी, उनकी अपनी उम्र और शारीरिक कमज़ोरी। वैसे उनकी उम्र के लिहाज़ से उनका स्वास्थ्य ठीक था लेकिन उनकी उम्र बहुत हो चुकी थी। और डॉ. हेडौक ने जब उनको बागवानी करने से मना कर रखा था

तो ऐसे में यह मुमकिन नहीं था कि वे उनको इस बात की इजाज़त देते कि वे जायें और एक ख़ूनी का पीछा करें। जबकि वह यही करने की योजना बना रही थीं—और यही उनकी सबसे बड़ी कमज़ोरी थी। वैसे भी इस ख़ून की जाँच उनके ऊपर एक तरह से थोप दी गयी थी, कह सकते हैं कि उन्होंने खुद आगे बढ़कर यह जाँच करने का फ़ैसला किया था, और वह इस बात को लेकर पक्के तौर पर यह तय नहीं कर पा रही थीं कि वह इस काम को करना चाहती थीं—वह बूढ़ी हो चुकी थीं, बूढ़ी और थकी हुई। इस समय एक थके हुए दिन के आखिर में किसी नये काम को शुरू करने के ख़याल में नहीं थीं। वह इस समय इससे अधिक कुछ भी नहीं चाहती थीं कि घर में आग के सामने बैठकर रात का खाना खायें, और सो जायें, अगले दिन उठकर अपने बगान में थोड़ा बहुत काम करें, बिना झुके, बिना खुद को थकाये।

'मैं अब इस तरह के ख़तरनाक काम के लिहाज़ से बहुत बूढ़ी हो चुकी हूँ,' मिस मार्पल ने खिड़की से बाहर आकाश में बादलों को देखते हुए खुद को कहा।

एक मोड़—

कुछ हल्का-सा उनके दिमाग़ में कौंधा—ठीक उसके बाद जब टिकट कलक्टर ने उनका टिकट जाँच लिया था—

इससे उनके दिमाग़ में एक ख़याल आया, सिर्फ़ ख़याल। एकदम अलग तरह का ख़याल—

उनके चेहरे पर हल्की-सी चमक आयी। अचानक उनको ऐसा लगा जैसे किसी तरह की थकान नहीं थी।

अचानक उनको एक और मूल्यवान सूझ आयी।

'बिलकुल। मेरा विश्वासी फ्लोरेन्स!'

II

उन्होंने अच्छी तरह अपनी योजना तैयार की जिसमें क्रिसमस के लिए कुछ छूट भी दी, जो ज़ाहिर तौर पर एक ध्यान बँटाने वाला समय था।

उन्होंने अपने पोते डेविड वेस्ट को लिखा, क्रिसमस की शुभकामनाएँ देते हुए उन्होंने उसे तुरन्त सूचना देने के लिए भी लिखा।

सौभाग्य से पिछले सालों की तरह इस बार भी उनको क्रिसमस डिनर के लिए आमन्त्रित किया गया था, यहाँ उन्होंने लियोनार्ड को नक्शे के सम्बन्ध में जानकारी के लिए घर बुलाया।

लियोनार्ड की हर तरह के नक्शे में रुचि थी। इस बात से उसको किसी तरह का सन्देह नहीं हुआ कि क्यों वह एक ख़ास इलाके के नक्शे के बारे में उससे इस क़दर पूछताछ कर रही थीं। उसने बड़े ध्यान से नक्शे के बारे में बताया और उनको यह भी लिखकर दिया कि इस काम के लिए सबसे अच्छा क्या रहेगा। वास्तव में, उसने इसे बेहतर कर दिया। उसको अपने संग्रह में वैसा एक नक्शा मिल भी गया, और उसने वह नक्शा उनको दे भी दिया, मिस मार्पल ने उससे यह वादा किया कि वह इस नक्शे को बेहद सम्भालकर रखेंगी और काम हो जाने के बाद उसको लौटा भी देंगी।

III

'नक्शा' उसकी माँ ग्रिसेल्दा ने आश्चर्य से पूछा। 'उनको नक्शे किसलिए चाहिए?'

'पता नहीं,' युवा लियोनार्ड ने कहा। 'मुझे उन्होंने इसके बारे में कुछ बताया नहीं।'

'मुझे हैरत हो रही है,' ग्रिसेल्दा ने कहा। 'मुझे दाल में कुछ काला लग रहा है—उनकी उम्र में आकर लोग इस तरह के काम छोड़ दिया करते हैं।'

लियोनार्ड ने पूछा कि किस तरह के काम, और उसने विस्तार से बताना शुरू कर दिया।

'ओह, हर काम में नाक घुसाना। नक्शा क्यों, मुझे आश्चर्य हो रहा है?'

इस बीच मिस मार्पल को अपने पोते डेविड वेस्ट का ख़त मिला। उसने बड़े प्यार से लिखा था:

'प्यारी दादी जेन,—अब क्या हो गया? आपने जो सूचनाएँ माँगी थीं, मैंने जुटा ली हैं। केवल दो ट्रेन उस दौरान गुज़रती हैं—4:33 और 5 बजे। पहली वाली ट्रेन कम रफ़्तार से चलती है जो हेलिंग ब्रॉडवे, बरवेल, ब्रैखेम्प्टन और फिर मार्केट बेसिंग में रुकती है। जबकि 5 बजे वाली वेल्श एक्सप्रेस है जो कार्डिफ, न्यूपोर्ट और स्वानसी जाती है। पहली वाली ट्रेन ने क़रीब 4:50 बजे उस ट्रेन को पार किया होगा, क्योंकि वह ब्रैखेम्पटन में कुछ मिनट पहले पहुँचती है।

क्या इसके पीछे किसी तरह का स्कैंडल है? क्या आप 4:50

से ख़रीदारी करके लौट रही थीं और आपने देखा कि मेयर की पत्नी सफाई इंस्पेक्टर के गले लग रही है? लेकिन इससे क्या फ़र्क पड़ता है कि कौन-सी ट्रेन थी? पुलोवर के लिए शुक्रिया। आपका बगीचा कैसा है? मैं समझ सकता हूँ कि आप साल के इस समय उतनी सक्रिय नहीं होंगी।

हमेशा आपका,

डेविड।

मिस मार्पल थोड़ा-सा मुस्कुराई, और फिर उन्होंने उस सूचना के बारे में सोचा जो कि उन्हें दी गयी थी। मिसेज़ मैकगिलीकडी ने साफ़ तौर पर कहा था कि उस कूपे में गलियारा नहीं था। इसलिए वह स्वानसी एक्सप्रेस नहीं हो सकती। इसका मतलब है कि वह 4:33 की ट्रेन हो सकती थी।

कुछ और यात्राओं को रोका नहीं जा सकता था। मिस मार्पल ने उबासी ली, लेकिन अपनी योजना भी बना ली।

इस बार वह लन्दन पहले की तरह ही 12:15 से गयीं, लेकिन इस बार वह 4:50 से नहीं आयीं बल्कि ब्रेखेम्पटन तक उन्होंने 4:33 से सफ़र किया। यात्रा आम रही, लेकिन उन्होंने कुछ चीज़ों को दर्ज किया। ट्रेन में अधिक भीड़ नहीं थी—क्योंकि वह शाम की भीड़-भाड़ वाले समय से ठीक पहले की ट्रेन थी। पहले दर्जे के कूपों में से महज़ एक ही भरा हुआ था—एक बेहद बूढ़ा आदमी न्यू स्टेट्समैन पढ़ रहा था। मिस मार्पल ने एक खाली कूपे में सफ़र किया और दो स्टेशनों, हेलिंग ब्रॉडवे तथा बरवेल हीथ पर उन्होंने खिड़की से बाहर सिर निकालकर ट्रेन में आने-जाने वाले यात्रियों पर नज़र दौड़ायी। हेलिंग ब्रॉडवे पर तीसरे दर्जे में कुछ यात्री चढ़

गये। बरवेल हीथ पर तीसरे दर्जे के कुछ यात्री उतरे। सिवाय उस बूढ़े आदमी के पहले दर्जे के डिब्बे में न कोई यात्री चढ़ा न ही उतरा।

जब ट्रेन ब्रैखेम्पटन के पास पहुँची और उसके लिए मुड़ने लगी तो मिस मार्पल अपने पैरों पर खड़ी होकर उस खिड़की के पास जाकर खड़ी हुई जिसके ऊपर उन्होंने पर्दा गिरा रखा था।

उन्होंने यह देखने का फ़ैसला किया कि जब ट्रेन वहाँ मुड़ती है और उसकी रफ़्तार में कमी आती है तो क्या खिड़की के पास किसी का सन्तुलन बिगड़ सकता है और जिसके कारण क्या उसका पर्दा उठ सकता है? उन्होंने रात को देखा। वह उस दिन के मुक़ाबले हल्की थी जिस रात मिसेज़ मैकगिलीकडी ने सफ़र किया था—केवल अँधेरा था, इसलिए कुछ दिखा नहीं। देखने के लिए उनको दिन में सफ़र करना चाहिए।

अगले दिन वह सुबह के ट्रेन से गयी। तकिये के चार खोल खरीदे ताकि अपनी जाँच और घर के ज़रूरी सामानों की खरीद से जोड़ सकें, और जिस ट्रेन से लौटीं वह पेडिंग्टन से 12:15 बजे छूटती थी। इस बार भी वह पहले दर्जे के कूपे में अकेली थीं। उन्होंने सोचा कि भीड़-भाड़ के समय में व्यापारियों को छोड़कर पहले दर्जे में कोई भी सफ़र नहीं करता है, क्योंकि वे खर्चे दिखाकर टैक्स बचा सकते हैं।

ट्रेन के ब्रैखेम्पटन पहुँचने में जब 15 मिनट बाकी थे तो मिस मार्पल ने नक्शा निकाला और वहाँ के गाँवों के बारे में अध्ययन करने लगीं। उन्होंने नक्शे को बहुत ध्यान से पढ़ा और बीच से गुज़रने वाले स्टेशनों के नाम सावधानी से लिख

लिये, और उनको जल्दी ही वह जगह समझ में आ गयी जहाँ से ट्रेन मुड़ती थी। वह सच में बहुत जाना-पहचाना मोड़ था। मिस मार्पल ने खिड़की से नाक लगाकर अपने नीचे की धरती के बारे में अध्ययन करना शुरू किया। जब तक ट्रेन ब्रैखेम्पटन पहुँची तब तक वह बाहर और नक्शे को देखकर मिलान करती रहीं।

उस रात उन्होंने ब्रैखेम्पटन की मिस फ्लोरेन्स हिल के नाम चिट्ठी लिखी, जो 4 मेडिसन रोड पर रहती थी। अगले दिन लाइब्रेरी में जाकर उन्होंने ब्रैखेम्पटन की डायरेक्टरी, वहाँ के गैज़ेट, और गाँव के इतिहास के बारे में जानकारी जुटाई।

जो धुँधला-सा ख़याल उनके दिमाग़ में आया था उससे अलग उनको कुछ भी नहीं पता चला। जो उन्होंने सोचा था वह सम्भव था और वह उससे आगे नहीं जाना चाहती थी।

लेकिन इसके बाद का जो क़दम था उसके लिए काम करने की ज़रूरत थी—काफ़ी काम करने की ज़रूरत थी—ऐसा काम, जिसके लिहाज से उनका शरीर तैयार नहीं था। उनकी बात सही या ग़लत साबित होती लेकिन इससे पहले उनको और भी कुछ स्रोतों से मदद लेने की ज़रूरत थी। सवाल यह था कि कौन? मिस मार्पल ने कई नामों के बारे में सोचा लेकिन गर्दन हिलाकर खुद ही उनको ख़ारिज कर दिया। जिन होशियार लोगों की होशियारी के ऊपर वह भरोसा कर सकती थीं वे सभी बहुत व्यस्त थे। उन सभी के हाथों में महत्वपूर्ण काम थे और उनके लिए खाली वक़्त निकाल पाना बहुत मुश्किल था। जिन लोगों के पास समय था उनके बारे में मिस मार्पल का विचार था कि वे किसी काम के नहीं थे।

वे उलझन को सुलझाने की उधेड़बुन में लगी रहीं, सोचती

रहीं। अचानक उनके दिमाग़ में एक नाम आया।

'बिलकुल,' मिस मार्पल ने कहा। 'लूसी आईलेसबरो!'

अध्याय-4

लूसी आईलेसबरो का नाम जाना माना हो गया था।

लूसी आईलेसबरो की उम्र 32 साल थी। उसने ऑक्सफोर्ड से गणित में प्रथम श्रेणी से पास किया था, उसके बारे में यह कहा जाता था कि वह दिमाग़ की बहुत तेज़ है और उसके बारे में यह उम्मीद की जा रही थी कि वह अकादमिक जगत में कैरियर बनायेगी।

लूसी आईलेसबरो पढ़ाई में तेज़ होने के अलावा सामान्य बुद्धि में भी बहुत तेज़ मानी जाती थी। वह इस बात को समझ गयी थी कि केवल पढ़ाई में बेहतर होने से कोई ख़ास फ़ायदा नहीं होता। उसकी पढ़ाई में कोई रुचि नहीं थी और उसको ऐसे लोगों के साथ रहना अच्छा लगता था जो उससे कम प्रतिभा वाले थे। संक्षेप में कहें, तो उसकी दिलचस्पी हर तरह के लोगों में थी और वह हर वक़्त एक तरह के लोगों के साथ ही नहीं रहना चाहती थी। साफ़-साफ़ कहें, तो उसको पैसा भी बहुत अच्छा लगता था। पैसा कमाने के लिए एक आदमी की कमजोरियों का लाभ उठाना चाहिए।

एक बार घर में काम करने वाले हुनरमन्द लोगों की बड़े पैमाने पर कमी हो गयी। उसके दोस्तों और पढ़े लिखे तबके के लोगों को तब बहुत आश्चर्य हुआ जब लूसी आईलेसबरो ने घरों में काम करने का काम शुरू कर दिया।

उसको तत्काल सफलता मिली और पक्के तौर पर सफलता मिली। लेकिन अब कई सालों के बाद उसका नाम पूरे ब्रिटेन में था। पत्नियाँ अपने पतियों से कहा करती थी कि मैं तुम्हारे साथ अमेरिका जा सकती हूँ क्योंकि मेरे पास लूसी

आईलेसबरो है! लूसी आईलेसबरो की ख़ासियत यह थी कि वह जिस भी घर में घुसती थी वहाँ से चिन्ता फ़िक्र गायब हो जाती थी। लूसी आईलेसबरो हर काम करती थी, सबका ध्यान रखती थी, सभी सामानों का ध्यान रखती थी। वह अविश्वसनीय ढंग से हर काम में होशियार थी। वह बुजुर्गों की देखभाल किया करती थी, बच्चों की देखभाल करना स्वीकार करती थी, बीमारों की सुश्रुषा किया करती थी, बढ़िया खाना बनाती थी, किसी पुराने नौकर के साथ अच्छी तरह से निभाती थी, जिनके साथ निभाना मुश्किल होता था उन जैसे लोगों के साथ भी निबाह कर लेती थी, शराबियों को राहत पहुँचाती थी, कुत्तों के साथ तो बहुत ही अच्छा रिश्ता बना लेती थी। सबसे बढ़कर बात यह थी कि वह जो भी करती थी उसका बुरा नहीं मानती थी। वह रसोई के फ़र्श को पोंछती थी, बगीचे में खुदाई किया करती थी, कुत्तों की गन्दगी साफ़ किया करती थी, और कोयला धोने का काम भी किया करती थी!

उसका एक नियम था कि वह किसी भी काम को बहुत लम्बे समय तक करना स्वीकार नहीं करती थी। 15 दिन उसका सामान्य कार्यकाल होता था—बहुत ज़रूरी होने की अवस्था में एक महीने तक काम करना स्वीकार कर लेती थी। 15 दिनों के समय के लिए आपको जो पैसा देना पड़ता था उसके बदले में आपको स्वर्ग जैसा सुख मिलता था। आप पूरी तरह से आराम कर सकते थे, विदेश जा सकते थे, घर में बैठ सकते थे, जो मन में आये कर सकते थे, अगर घर लूसी के समर्थ हाथों में होता तो यह पक्का रहता था कि सब कुछ ठीक-ठाक रहेगा।

इसी वजह से स्वाभाविक तौर पर उसकी सेवाओं की ज़बर्दस्त माँग थी। अगर वह चाहती तो आने वाले तीन सालों

के लिए बुकिंग कर सकती थी। स्थायी तौर पर काम करने के लिए उसको काफ़ी पैसे देने की पेशक़श की जाती थी। लेकिन लूसी का स्थायी रूप से काम करने में कोई यकीन नहीं था, न ही वह छह महीने से अधिक की बुकिंग करती थी। और इस दौरान वह कुछ समय अपने लिए भी निकाल लेती थी, जो उसकी सेवा लेने वालों को पता नहीं होता था (क्योंकि कुछ भी और खर्च नहीं करती थी और उसे बहुत अच्छी राशि दी जाती थी जिनको वह बचाकर रखती थी) या कुछ समय किसी पद को स्वीकार कर लेती थी वह भी इसलिए क्योंकि या तो उसे काम बहुत पसन्द आ जाता था या उसे देने वाले लोग अच्छे लग जाते थे। चूँकि उसको यह आज़ादी थी कि वह अपने लिए काम चुन सके तो वह अधिकतर निजी पसन्द नापसन्द के आधार पर काम चुना करती थी। केवल पैसे की बदौलत ही आप लूसी आईलेसबरो की सेवाओं को हासिल नहीं कर सकते थे। काम वह खुद चुनती थी। काम देने वाले उसे नहीं चुन सकते थे। वह अपने जीवन को बेहद पसन्द करती थी और उसे इसमें लगातार मज़ा भी आता था।

लूसी आईलेसबरो ने मिस मार्पल की चिट्ठी को बार-बार पढ़ा। मिस मार्पल से उसकी पहचान दो साल पहले तब हुई थी जब उपन्यासकार रेमण्ड वेस्ट के लिए उसने काम किया था। उसने उसकी बूढ़ी बुआ की देखभाल की थी जब उनको न्यूमोनिया हो गया था।

लूसी ने काम करना स्वीकार कर लिया और सेंट मेरी मीड तक गयी थी। उसको मिस मार्पल बहुत पसन्द आयीं। जहाँ तक मिस मार्पल का सवाल था तो उन्होंने अपने कमरे की खिड़की से लूसी आईलेसबरो की एक झलक देखी और निश्चिन्त होकर तकिये पर घूमकर सो गयीं, उन्होंने वह

स्वादिष्ट खाना खाया जो लूसी आईलेसबरो लेकर आयी थी और उनको तब बहुत आश्चर्य हुआ जब उनको उनकी आया ने बताया कि किस तरह लूसी आईलेसबरो ने उसको क्रोशिया का एक ऐसा डिज़ाइन सिखाया जिसके बारे में उसने कभी सुना भी नहीं था। इसके लिए वह बहुत आभारी थी! और जिस तेज़ी से उसने स्वास्थ्य लाभ किया उससे डॉक्टर भी हैरत में पड़ गये।

मिस मार्पल ने यह पूछा था कि क्या लूसी आईलेसबरो एक ख़ास काम उसके लिए कर सकती थी—जो थोड़ा अलग तरह का था? सम्भव हो तो लूसी आईलेसबरो एक बार मिल लें जिससे वे उसके बारे में बातचीत कर सकें।

एक मिनट के लिए लूसी आईलेसबरो की त्योरियाँ चढ़ गयीं। तब उसने इस बारे में सोचा। असल में उसके पास बिलकुल समय नहीं था। लेकिन असामान्य शब्द ने उसका ध्यान खींचा, मिस मार्पल के व्यक्तित्व का भी उसको ध्यान आया, उसने मिस मार्पल को फ़ोन मिलाया और कहा कि वह उस दिन तो नहीं आ सकती है लेकिन अगले दिन 2 से 4 बजे के बीच उसके पास समय है। तब वह मिस मार्पल के लन्दन में कहीं भी मिल सकती थी। उसने अपने क्लब में मिलने का सुझाव दिया जहाँ कई छोटे-छोटे कमरे थे और वहाँ लोग कम ही आते थे।

मिस मार्पल को यह सुझाव पसन्द आया और अगले दिन दोनों की मुलाक़ात हुई।

अभिवादन के बाद लूसी आईलेसबरो अपनी मेहमान को सबसे अँधेरे कमरे में ले गयी और उसने कहा, 'इस समय तो मेरे पास बहुत काम है लेकिन आप मुझे बताएँ कि आप

मुझसे क्या चाहती हैं?'

'यह बहुत आसान है। थोड़ा अलग लेकिन बहुत आसान। मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे लिए एक लाश ढूँढ दो।'

एक मिनट के लिए लूसी को लगा जैसे मिस मार्पल का दिमाग़ ख़राब है, इसलिए उसने इस प्रस्ताव को ख़ारिज कर दिया। मिस मार्पल पूरी तरह से होश में थीं। उन्होंने जो कहा था, पूरे होशो हवास में कहा था।

'किस तरह की लाश है?' लूसी ने बेहद आराम से पूछा।

'एक औरत की लाश है, जिसकी ट्रेन में गला दबाकर हत्या कर दी गयी थी,' मिस मार्पल ने कहा।

लूसी की भौहें थोड़ी-सी तन गयी।

'यह तो सचमुच बहुत अजीब काम है। इसके बारे में मुझे बताइये।'

मिस मार्पल ने उसे बताया। लूसी ने ध्यान से सुना, बिना टोका-टाकी किये। और आखिर में उसने कहा, 'यह सब इस पर निर्भर करता है कि आपकी दोस्त ने क्या देखा—या सोचा कि उसने देखा था—?'

उसने एक सवालिया ढंग से अपने वाक्य को अधूरा छोड़ दिया।

'एल्स्पेथ मैकगिलीकडी बेवजह की कल्पना नहीं करती,' मिस मार्पल ने कहा। 'इसलिए मैं उसकी बातों पर विश्वास कर रही हूँ। अगर डोरोथी कार्टराइट होती तो बात कुछ और

होती। डोरोथी के पास हमेशा एक अच्छी कहानी होती है, और अक्सर उसके ऊपर वह खुद भी विश्वास करती है, और हालाँकि उसकी बातों में सच का थोड़ा बहुत अंश होता है लेकिन उससे अधिक नहीं। लेकिन एल्स्पेथ उस किस्म की औरत है जो किसी भी असाधारण बात के ऊपर कम ही विश्वास करती है। जिस बात के ऊपर उसका विश्वास एक बार जम जाता है उससे वह बड़ी मुश्किल से टलती है।'

'अच्छा,' लूसी ने कुछ सोचते हुए कहा। 'अच्छा चलिये हर बात मान लेते हैं। लेकिन मैं कहाँ आती हूँ इसमें?'

'मैं तुमसे बहुत प्रभावित हुई थी,' मिस मार्पल ने कहा। 'और आजकल मेरे शरीर में इतनी ताकत नहीं रह गयी है कि मैं इधर-उधर दौड़ भाग कर सकूँ।'

'आप यह चाहती हैं कि मैं इसके बारे में पूछताछ करूँ? इस तरह का काम? लेकिन क्या पुलिस ने सब कुछ किया नहीं है? या आपको लगता है उन्होंने ठीक से काम नहीं किया?'

'अरे नहीं,' मिस मार्पल ने कहा। 'ऐसा नहीं है कि उन्होंने ठीक से काम नहीं किया। लेकिन उस औरत की लाश को लेकर मेरी अपनी सोच है। मुझे लगता है कि उसे कहीं-न-कहीं होना चाहिए। अगर वह ट्रेन में नहीं थी तो ज़रूर उसे ट्रेन से फेंक दिया गया। लेकिन लाइन के आसपास वह कहीं मिली नहीं। मैंने उस रास्ते से यात्रा करके यह पता करने की कोशिश की कि ऐसी कोई जगह हो सकती है जहाँ उस लाश को फेंका जाये और वह किसी को न मिल पाये—और ऐसी एक जगह मुझे मिली। ब्रैखेम्पटन जाने से पहले रेलवे लाइन एक बाँध से बड़ा मोड़ लेती है। अगर लाश को वहाँ फेंका जाये जब ट्रेन कोण बनाते हुए मुड़ती है तो मुझे लगता

है कि लाश सीधे बांध के नीचे गिरेगी।'

'लेकिन ज़ाहिर है वह अभी वहाँ भी नहीं मिली है?'

'हाँ, उसे वहाँ से निकालना होगा—लेकिन हम अभी उस पर आयेंगे। नक्शे में ये है वह जगह?'

लूसी झुककर उस जगह को देखने लगी जहाँ मिस मार्पल ने इशारा किया था।

'अब यह ब्रैखेम्पटन के ठीक बाहर है,' मिस मार्पल ने कहा। 'लेकिन पहले यह एक कन्ट्री हाउस था, मैदान था—वह अब भी वहीं है। उसे रदरफोर्ड हॉल कहा जाता है। इसे क्राइकेनथोर्प नाम के एक आदमी ने बनवाया था, जो बहुत अमीर था, उसने 1884 में इसे बनवाया था। क्राइकेनथोर्प का बेटा अब भी वहाँ रहता है, मुझे लगता है अपनी बेटी के साथ। रेलवे ने उसकी आधी सम्पत्ति को घेर रखा है।'

'और आप क्या चाहती हैं कि मैं क्या करूँ?'

मिस मार्पल ने तत्काल जवाब दिया।

'मैं चाहती हूँ कि तुम वहाँ काम करो। हर कोई रो रहा है कि घर का काम ढंग से करने वाले नहीं मिलते—मुझे नहीं लगता है कि इसमें कोई मुश्किल होगी।'

'नहीं मुझे नहीं लगता है कि इसमें किसी तरह की मुश्किल होगी।'

'मुझे पता चला है कि मिस्टर क्राइकेनथोर्प को वहाँ आसपास के लोग कंजूस कहते हैं। अगर तुम वहाँ कम तनख्वाह पर

काम करना स्वीकार कर लो तो मैं बाकी पैसे तुमको दे दूँगी, जो कि अभी की दर से अधिक होगा।'

'मुश्किल की वजह से?'

'मुश्किल उतनी नहीं है इसमें जितना कि ख़तरा है, हो सकता है इसमें ख़तरा हो। बेहतर यही है कि मैं पहले ही तुमको उसके बारे में चेतावनी दे दूँ।'

'मुझे नहीं लगता,' लूसी ने कुछ सोचते हुए कहा, 'ख़तरे की वजह से मुझे कोई फ़र्क पड़ने वाला है।'

'मुझे नहीं लगा था कि इससे कोई फ़र्क पड़ने वाला है। तुम उस तरह की लड़की नहीं हो,' मिस मार्पल ने कहा।

'मुझे लगता है कि आपको यह लगा कि यह तब भी मुझे पसन्द आयेगा? मैंने ज़िन्दगी में अधिक ख़तरा उठाया नहीं है। लेकिन आपको क्या ऐसा लगता है कि यह ख़तरनाक हो सकता है?'

'किसी ने एक अपराध किया और वह उसे छिपाने में सफल भी रहा। किसी को पता नहीं चला, किसी को कोई शक़ नहीं हुआ। दो बूढ़ी औरतों ने ऐसी कहानी सुनाई जिसके ऊपर किसी को भरोसा नहीं हुआ, पुलिस ने छानबीन की और उसको कुछ भी नहीं पता चला। इसलिए सब कुछ ठीक रहा। इसलिए कोई यह नहीं चाहेगा कि इस मामले को उठाया जाये—ख़ासकर तब जब कि तुम इतनी सफल रही हो,' मिस मार्पल ने ध्यान दिलाते हुए कहा।

'मुझे एकदम से करना क्या है?'

'उस बाँध के आसपास देखना है कि कहीं किसी कपड़े का टुकड़ा हो, टूटी हुई झाड़ी हो—इसी तरह की चीज़ें।'

लूसी ने गर्दन हिलायी।

'और फिर?'

'मैं भी पास ही रहूँगी,' मिस मार्पल ने कहा। 'मेरी एक पुरानी नौकरानी, और मेरी विश्वासपात्र फ्लोरेन्स, वहीं ब्रैखेम्पटन में रहती है। वह काफ़ी सालों से अपने बूढ़े माता-पिता की देखभाल करती रही। अब वे दोनों मर चुके हैं, अब वह वहाँ लोगों को रहने के लिए जगह देती है—सभी सम्मानित किस्म के लोगों को। उसने मेरे लिए कमरे का इन्तज़ाम कर दिया है। वह अच्छी तरह से मेरा ध्यान रखेगी और मुझे लगेगा जैसे मैं अपने घर में ही हूँ। मेरा तुमको यह सुझाव है कि तुम यह कहना कि तुम्हारी एक बूढ़ी बुआ पास में ही रहती हैं, और तुम ऐसा काम चाहती हो ताकि तुम उनके पास रह सको, और यह भी तुम यह भी चाहती हो कि तुम्हारे पास इतना समय रहे ताकि तुम जाकर उनके साथ समय बिता सको।'

लूसी ने एक बार फिर सिर हिलाया।

'मैं कल के बाद ताओर्मीना जा रही थी,' उसने कहा। 'छुट्टियाँ इन्तज़ार कर सकती हैं। लेकिन मैं सिर्फ़ तीन सप्ताह का वादा कर सकती हूँ। उसके बाद मेरे पास समय नहीं है।'

'तीन सप्ताह काफ़ी रहेंगे,' मिस मार्पल ने कहा। 'अगर तीन सप्ताह में भी कुछ नहीं मिला तो हम इस चीज़ को भूल जायेंगे।'

मिस मार्पल वहाँ से चली गयीं, और लूसी ने एक पल सोचने

के बाद ब्रेखेम्पटन के रजिस्ट्री दफ़्तर में फ़ोन लगाया, जिसकी महिला मैनेजर को वह बहुत अच्छी तरह से जानती थीं। उन्होंने उससे कहा कि उसे अपनी बुआ के पड़ोस में रहने के लिए कोई काम चाहिए। कई जगह के बाद रदरफ़ोर्ड हॉल का ज़िक्र आया।

'यह एकदम वैसा ही लगता है जैसा कि मुझे चाहिए,' लूसी ने कहा। रजिस्ट्री दफ़्तर ने मिस क्राइकेनथोर्प को फ़ोन किया और मिस क्राइकेनथोर्प ने लूसी को।

दो दिन बाद लूसी लन्दन से रदरफोर्ड हाल के रास्ते में थी।

II

अपनी छोटी-सी कार चलाती हुई लूसी एक विशाल लोहे के गेट को पार करके अन्दर पहुँची। अन्दर एक छोटा-सा घर था लेकिन अब वह बुरी हालत में था। वजह चाहे युद्ध से हुआ नुकसान रहा हो या देखभाल की कमी, यह कहना मुश्किल था। एक लम्बी घुमावदार सड़क फूलों की लतरों को पार करती हुई घर तक ले गयी। लूसी ने उस घर को हैरत से देखा जो अपने आप में एक छोटा मोटा विंडसर पैलेस लग रहा था। दरवाज़े के सामने पत्थर की सीढ़ियाँ थी जो रख रखाव की कमी के कारण बदरंग हो चुकी थीं।

उसने एक पुराने ढंग के जंग लगी कॉलबेल दबाई, और उसकी आवाज़ अन्दर गूँजने लगी। एक महिला ने अपने हाथ ऐप्रन से पोंछते हुए दरवाज़े को खोला और सन्देह से उसे देखने लगी।

'तुम वही हो न,' उसने कहा। 'मुझे तुम्हारे बारे में उसने बता दिया था।'

'बिलकुल वही,' लूसी ने कहा।

घर अन्दर से बहुत ठण्डा था। जिसने घर का दरवाज़ा खोला था वह उसे एक अँधेरे हॉल में ले गयी और उसने दायीं तरफ़ का एक दरवाज़ा खोल दिया। लूसी को आश्चर्य हुआ क्योंकि वह काफ़ी अच्छी बैठक थी, किताबों और गद्देदार कुर्सियों वाली।

'मैं उनको बता देती हूँ,' उस औरत ने कहा और एक अजीब-सी नज़र से लूसी को देखते हुए उसने पीछे से

दरवाज़ा बन्द कर दिया।

कुछ मिनट के बाद दरवाज़ा फिर से खुला। एक पल में ही लूसी ने तय कर लिया कि उसे एम्मा क्राइकेनथोर्प पसन्द है।

वह अधेड़ महिला थी जिसके नैन नक्श कुछ ख़ास नहीं थे, उसने ट्वीड और पुलोवर पहन रखा था, अपने गहरे बालों को उसने माथे से पीछे की तरफ़ कर रखा था, उसकी बादामी आँखें थी और बहुत मीठी आवाज़।

उसने कहा, 'मिस आईलेसबरो?' और अपने हाथ आगे बढ़ा दिये।

फिर उसने कुछ सन्देह से देखा।

'मुझे अजीब लग रहा है,' उसने कहा, 'क्या तुम यही काम करना चाह रही थी? मुझे घर की देखभाल के लिए कोई नहीं चाहिए। मुझे तो काम करने वाली चाहिए।'

लूसी ने कहा कि ज़्यादातर लोग यही चाहते हैं।

एम्मा क्राइकेनथोर्प ने माफ़ी माँगने के अन्दाज़ में कहा:

'कई लोग ये सोचते हैं कि थोड़ी बहुत झाड़-सफाई से काम चल जायेगा—लेकिन उतना काम तो मैं खुद भी कर सकती हूँ।'

'मैं समझ गयी। आप चाहती हैं कि कोई खाना पकाना, बर्तन धोना, साफ़-सफाई जैसे काम करे। यही तो मैं करती हूँ। मुझे काम करने से डर नहीं लगता,' लूसी ने कहा।

'मैं तुमको बता दूँ कि यह एक बड़ा घर है, और थोड़ा

अजीब-सा भी। हालाँकि हम इसके एक हिस्से में ही रहते हैं—मेरे पिता और मैं, बस। वे थोड़े अशक्त हैं। हम लोग बेहद ख़ामोशी से रहते हैं। मेरे कई भाई हैं, लेकिन वे कभी-कभार ही आते हैं। दो महिलायें आती हैं, सुबह के समय मिसेज़ किडर और मिसेज़ हार्ट सप्ताह में तीन दिन आती हैं पीतल के सामानों पर कलई चढ़ाने के लिए। तुम्हारे पास अपनी कार है?'

'हाँ। यह बाहर खुले में रह सकती है।'

'अरे नहीं यहाँ कई पुराने अस्तबल हैं। उसे रखने में कोई मुश्किल नहीं है।' उसने एक मिनट के लिए कुछ सोचा फिर कहा, 'आईलेसबरो—अजीब-सा नाम है। मेरे कुछ दोस्त किसी लूसी आईलेसबरो के बारे में बता रहे थे—केनेडी के परिवार में भी थी।'

'हाँ, मैं उनके साथ उत्तरी देवन में थी जब श्रीमती केनेडी को बच्चा होने वाला था।'

'मुझे पता है, वे कह रहे थे कि इतना अच्छा वक़्त उनके लिए कभी नहीं रहा जब तुम वहाँ थी, तुम हर चीज़ की देखभाल किया करती थी। लेकिन मेरा ख़्याल था कि तुम बहुत अधिक पैसे लेती हो। मैंने जो पैसे देने के लिए कहे थे—'

'बिलकुल सही,' लूसी ने जवाब दिया। 'मैं ब्रैखेम्पटन के पास रहना चाहती थी। मेरी एक बूढ़ी बुआ हैं जिनकी हालत अच्छी नहीं है और मैं यह चाहती थी कि उनके आसपास रहूँ। इसलिए मैंने वेतन के ऊपर अधिक ध्यान नहीं दिया। बिना काम के रहना मेरे लिए सम्भव नहीं है। अगर यह पक्का हो कि मुझे हर दिन कुछ समय की छुट्टी मिल पायेगी?'

'बिलकुल, हर दोपहर से शाम छह बजे तक, अगर तुम राजी हो तो?'

'एकदम सही है।'

कुछ झिझकते हुए मिस क्राइकेनथोर्प ने कहा, 'मेरे पिता बूढ़े हैं—और कभी-कभी सम्भाल में नहीं आते। वे पैसे के मामले में थोड़ा ध्यान रखने वाले हैं, और कई बार कुछ ऐसा कह जाते हैं जिससे लोगों को परेशानी हो जाती है, मैं नहीं चाहती—'

लूसी ने तुरन्त जवाब दिया:

'मुझे बुजुर्गों के साथ काम करने की आदत है, हर तरह के,' उसने कहा। 'मैं उनके साथ हमेशा निभा लेती हूँ।'

एम्मा क्राइकेनथोर्प ने राहत महसूस किया।

'आपके पिता को क्या समस्या है? मुझे लगता है कि उम्र के साथ उनमें चिड़चिड़ापन आ गया होगा,' लूसी ने कहा।

वह लूसी को घर दिखाने लगी। वह बहुत बड़ा महल था। जब वे एक दरवाज़े के सामने से गुज़रे तो एक आवाज़ आयी:

'एम्मा तुम हो? नयी लड़की आयी है? उसे अन्दर लेकर आओ। मैं उसको देखना चाहता हूँ।'

एम्मा शर्मा गयी। उसने माफी के अन्दाज़ से लूसी की तरफ़ देखा।

दोनों महिलाओं ने कमरे में प्रवेश किया। कमरे में काफ़ी अच्छी तरह से गद्दे लगाये गये थे, पतली खिड़कियों से

हल्की-सी रोशनी आ रही थी, और उसमें विक्टोरियाई शैली के महोगनी के फर्नीचर लगे हुए थे।

बुजुर्ग मिस्टर क्राइकेनथोर्प एक टूटी हुई कुर्सी में पसरे हुए थे, बगल में चाँदी की मूठ वाली एक छड़ी रखी हुई थी।

वे एक विशालकाय आदमी थे और उनकी झुर्रियाँ लटकी हुई थीं। उनका चेहरा किसी बुलडॉग की तरह था, चिपकी हुई ठुड्डी, सिर में बाल घने और खिचड़ी; आँखें छोटी लेकिन शक़ से भरी हुई।

'आओ लड़की, तुमको देख लूँ।'

लूसी शान्त और मुसकुराते हुए भाव से आगे बढ़ी।

'एक बात तुमको अभी समझ में आ जानी चाहिए। हम बड़े घर में रहते हैं इसका मतलब यह नहीं है कि हम अमीर हैं। हम अमीर नहीं हैं। हम साधारण तरीके से रहने वाले लोग हैं—समझी! इस बात को मत भूलना। मैं समय बर्बाद नहीं करना चाहता। मैं यहाँ रहता हूँ क्योंकि मेरे पिता ने यह घर बनवाया था और मुझे यह पसन्द है। मेरे मरने के बाद अगर वे चाहें तो इसे बेच सकते हैं—और मैं चाहता हूँ कि वे ऐसा करें। इसमें परिवार का कोई भाव नहीं है। यह घर अच्छी तरह बना है—मज़बूत है, और इसके आसपास हमारी अपनी ज़मीन है। जो हमें सबसे अलग बनाये रखता है। अगर ज़मीन बेच दें तो काफ़ी पैसा आयेगा लेकिन तब तक नहीं जब तक कि मैं ज़िन्दा हूँ। तुम तब तक मुझे यहाँ से नहीं निकाल सकती हो जब तक कि मैं मर नहीं जाता।'

उसने लूसी की तरफ़ घूरा।

'आपका घर किला है,' लूसी ने कहा।

'मेरे ऊपर हँस रही हो?'

'बिलकुल नहीं। मुझे लगता है कि इस तरह शहरों से घिरे गाँव में घर होना बहुत रोमांचक होता है।'

'एकदम। यहाँ से कोई और घर नहीं देख सकते, क्या तुम देख सकती हो? खेत में चरती गायें—ब्रेखेम्पटन के एकदम बीच में। जब इस तरफ़ की हवा चलती है तो ट्रैफिक की आवाज़ सुनाई देती है—लेकिन उसके अलावा यह अभी भी गाँव है।'

उसने बिना लहजा बदले अपनी बेटी से कहा:

'डॉक्टर को फ़ोन मिलाओ। उससे कहो कि पिछली दवाई किसी काम की नहीं थी।'

लूसी और एम्मा वहाँ से चले गये। वह आदमी उनके ऊपर चिल्लाया:

'और उस औरत को यहाँ धूल झाड़ने के लिए मत भेजना। उसने मेरी सारी किताबें इधर-उधर कर दीं।'

लूसी ने पूछा:

'क्या मिस्टर क्राइकेनथोर्प बहुत दिनों से अशक्त हैं?'

एम्मा ने कुछ टालने वाले अन्दाज़ में कहा:

'ओह, सालों से—यह रसोई है।'

रसोई बहुत बड़ी थी। रसोई का बहुत सारा समान वहाँ यूँ ही पड़ा था।

लूसी ने खाने के समय के बारे में पूछा और भण्डार को देखने लगी। फिर उसने खुश होकर एम्मा से कहा, 'अब मुझे सब कुछ पता चल गया। परेशान मत होइये। सब मेरे ऊपर छोड़ दीजिये।'

एम्मा निश्चिन्त होकर उस रात सोने चली गयी।

'केनेडी परिवार का कहना सही था,' उसने कहा। 'यह तो कमाल है।'

अगले दिन लूसी सुबह छह बजे उठी। उसने घर ठीक किया, सब्जी तैयार की, उनको एक साथ जुटाया, पकाकर नाश्ता परोसा, फिर मिसेज़ किडर के साथ उसने घर के बिस्तर ठीक किये और क़रीब 11 बजे वे रसोई में बिस्कुट के साथ कड़क चाय पीने के लिए बैठ गये। इस बात को समझते हुए कि लूसी को अपने बारे में कोई गुमान नहीं है, साथ ही चाय की मिठास और ताकत के कारण मिसेज़ किडर गप्पें मारने लगीं, वह एक छोटी-सी महिला थी जिनकी आँखें तेज़ थी और होंठ जकड़े हुए।

'बड़ा पुराना कंजूस है। लेकिन ये नहीं कहा जा सकता कि इस औरत की हालत ख़राब है। जब ज़रूरी होता है तब अपनी बात रखवा लेती है। जब सज्जन लोग नीचे आते तो यह ध्यान रखती थी कि कुछ बढ़िया खाने के लिए हो।'

'सज्जन लोग?'

'हाँ, यह परिवार बड़ा था। सबसे बड़े मिस्टर एडमण्ड लड़ाई

में मारे गये। फिर मिस्टर सेडरिक हैं, जो कहीं विदेश में रहते हैं। उनकी शादी नहीं हुई है। बाहर के मुल्क में चित्र बनाते हैं। मिस्टर हैरोड हैं, जो लन्दन में रहते हैं—एक अर्ल की बेटी से उनकी शादी हुई। फिर मिस्टर अलफ्रेड हैं, उनका अच्छा चल रहा है। लेकिन वे कुछ ग़लत काम करते हैं, एकाध बार मुश्किल में भी फँस चुके हैं—और फिर मिस एडिथ के पति हैं, मिस्टर बारन, हमेशा बहुत अच्छे बने रहने वाले। उनकी कुछ साल पहले मौत हो गयी, लेकिन वे हमेशा परिवार की तरह ही रहे। फिर मास्टर अलेक्ज़ेंडर है, मिस एडिथ का छोटा बेटा। वह स्कूल में है, छुट्टियों में यहाँ आता है; मिस एम्मा उसे बुरी तरह से डाँटती हैं।'

लूसी बातें सुनती रही, बताने वाले को चाय पिलाती रही। आख़िरकार, मिसेज़ किडर खड़ी हुई।

'ऐसा लगता है आज सुबह हम लोगों का भोज हो गया' उसने कुछ आश्चर्य से कहा। 'तुम चाहती हो कि आलू बनाने में मैं तुम्हारी मदद करूू?'

'सब तैयार है।'

'अच्छा तुम सारे काम कर ले रही हो। मुझे भी अपने काम करने चाहिए वैसे अब ज़्यादा कुछ करने को है नहीं।'

मिसेज़ किडर चली गयी, लूसी के पास समय था इसलिए वह रसोई की टेबल को साफ़ करना चाहती थी, लेकिन उसने किया नहीं क्योंकि वह नहीं चाहती थी मिसेज़ किडर को बुरा लगे क्योंकि वह उनका काम था। फिर उसने चाँदी को साफ़ करके चमका दिया। उसने खाना पकाया, उसे साफ़ किया, और क़रीब ढाई बजे वहाँ से जाने के लिए तैयार हो गयी।

उसने चाय का सामान तैयार कर दिया, सैंडविच, ब्रेड, मक्खन को एक गीले कपड़े से ढँक दिया ताकि उसमें नमी बनी रहे।

वह बगीचे में टहलने लगी जो कि एक सामान्य-सी बात थी। किचन गार्डेन अच्छी तरह से उगाया गया था, उसमें कुछ सब्जियाँ भी उगी हुई थीं। गरम घर खण्डहर बन चुका था, रास्तों में हर जगह घास उगी हुई थी। घर के सामने उगी हुई कुछ शाखें ही ऐसी थीं जिनको देखकर लूसी को शक़ हुआ कि यह एम्मा ने किया हो शायद। माली बेहद बूढ़ा था, थोड़ा बहरा भी था, और उसको देखकर लग रहा था कि वह महज़ दिखाने के लिए काम कर रहा था। लूसी ने उससे सहजता से बात की। वह एक बड़े अस्तबल के पास एक झोंपड़ी में रहता था। अस्तबल से बाहर की तरफ़ का रास्ता एक बाड़े की तरफ़ जाता जिसे दोनों तरफ़ से घेरा गया था, और रेलवे के मेहराब के नीचे एक छोटी-सी गली थी।

हर कुछ मिनट पर कोई ट्रेन उस मेहराब या खम्भे के ऊपर बनी लाइन से गुज़रती थी। लूसी ने ट्रेन को देखा जिस तरह से तेज़ मोड़ के पास आकर उनकी रफ़्तार धीमी हो जाती थी, जो कि क्राइकेनथोर्प की सम्पत्ति के चारों ओर से बनी हुई थी। वह रेलवे के उस खम्भे के नीचे से होती हुई गली में आ गयी। उसको देखकर लगता था कि आने-जाने के लिए उसका इस्तेमाल कम ही होता था। एक तरफ़ रेलवे का बाँध था, उसके दूसरी तरफ़ एक ऊँची दीवार थी जिसके अन्दर कोई कारख़ाना था। लूसी उस गली में चलते-चलते छोटे-छोटे घरों वाली एक सड़क पर निकल आयी। उसे कुछ दूरी पर ट्रैफिक का शोर सुनाई देने लगा। उसने अपनी घड़ी की तरफ़ देखा। पास के एक घर से एक औरत निकल कर आयी और लूसी ने उसको रोक दिया।

'कृपया मुझे यह बताइये कि क्या यहाँ कोई फ़ोन बूथ है?'

'सड़क के किनारे डाकघर है।'

लूसी ने उसे धन्यवाद कहा और चलती हुई डाकघर के पास आ गयी, जिसमें एक दुकान और डाकघर दोनों थे। एक तरफ टेलीफ़ोन का बक्सा रखा हुआ था। लूसी ने वहाँ जाकर फ़ोन मिलाया। उसने कहा कि उसे मिस मार्पल से बात करनी है। एक महिला की आवाज़ दूसरी तरफ़ से चीखी। 'वह आराम कर रही हैं। मैं उनको परेशान नहीं कर सकती। उनको आराम की ज़रूरत है—वह एक बूढ़ी औरत हैं। मैं क्या कहूँ कि किसने फ़ोन किया था?'

'मिस आईलेसबरो। उनको परेशान करने की कोई ज़रूरत नहीं है। सिर्फ़ उनको यह बता दीजियेगा कि मैं यहाँ आ चुकी हूँ और सब कुछ ठीक चल रहा है और यह कि जब मेरे पास कुछ बताने को होगा तो उनको बता दूँगी।'

उसने फ़ोन रखा और रदरफोर्ड हॉल वापस जाने के लिए चल पड़ी।